‘सूचना चार्ट शीट..

सेक्टर-9 पीजी गवर्नमेंट कॉलेज के स्टूडेंट्स पाठ्यक्रम बीजेएमसी (बैचलर ऑफ आर्ट्स इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन) के छात्रों द्वारा दी गई जानकारी

चार्ट शीट बताती है उनकी ,

चिंताओं के बारे में:

गुरुग्राम के सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के BJMC (बैचलर ऑफ़ आर्ट्स इन जर्नलिज़्म एंड मास कम्युनिकेशन) कोर्स के स्टूडेंट्स को अपने चौथे सेमेस्टर के एग्ज़ामिनेशन रिजल्ट घोषित न होने की वजह से गंभीर पढ़ाई-लिखाई की मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज गुरुग्राम यूनिवर्सिटी से जुड़ा हुआ है, और संबंधित एग्ज़ामिनेशन यूनिवर्सिटी के एकेडमिक फ्रेमवर्क के तहत आयोजित किए गए थे

BGMC कोर्स के स्टूडेंट्स ने 20 मई 2025, 22 मई 2025, और 24 मई 2025 को अपने चौथे सेमेस्टर के एग्ज़ाम दिए थे इन सब्जेक्ट्स में क्रमशः **मीडिया का इतिहास**, **मीडिया और समाज**, और **रेडियो जर्नलिज़्म** शामिल थे

इन एग्ज़ामिनेशन में सफलतापूर्वक बैठने के बाद, स्टूडेंट्स को उम्मीद थी कि उनके रिजल्ट एग्ज़ामिनेशन रिजल्ट के लिए तय नॉर्मल टाइमफ्रेम के अंदर घोषित कर दिए जाएंगे आम तौर पर, स्टूडेंट्स को उम्मीद थी कि एग्ज़ाम की तारीख से लगभग 90 से 120 दिनों के अंदर रिजल्ट आ जाएगा लेकिन, सब्र से इंतज़ार करने के बाद भी, स्टूडेंट्स को तय समय में रिजल्ट नहीं मिला

शुरू में, स्टूडेंट्स को लगा कि रिजल्ट आने में बस देरी हुई है और मामला जल्द ही सुलझ जाएगा बदकिस्मती से, जो देरी शुरू हुई थी, वह धीरे-धीरे एक साल से ज़्यादा हो गई इतना लंबा समय बीत जाने के बाद भी, स्टूडेंट्स को अभी तक अपने चौथे सेमेस्टर के रिजल्ट नहीं मिले हैं

इस पूरे समय के दौरान, स्टूडेंट्स लगातार सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के फैकल्टी मेंबर्स, क्लास इंचार्ज और संबंधित अधिकारियों से देरी के बारे में जानकारी लेने के लिए संपर्क करते रहे लेकिन, उन्हें बार-बार बताया गया कि यह मुद्दा पहले ही गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के सामने उठाया जा चुका है और कॉलेज को खुद यूनिवर्सिटी अधिकारियों से कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला है

कॉलेज एडमिनिस्ट्रेशन से बार-बार एक ही जवाब मिलने के बाद, स्टूडेंट्स ने खुद ही अपने पेंडिंग रिजल्ट और भविष्य की पढ़ाई की

संभावनाओं के बारे में जानकारी लेने के लिए सीधे गुरुग्राम यूनिवर्सिटी से संपर्क करने का फैसला किया एग्ज़ाम हुए एक साल से ज़्यादा हो गया है, फिर भी फोर्थ सेमेस्टर के रिज़ल्ट अभी तक घोषित नहीं हुए हैं यह मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि ये स्टूडेंट्स अपने कोर्स के फ़ाइनल ईयर में हैं इस बीच, वे पहले ही अपने फ़ाइनल सेमेस्टर के एग्ज़ाम दे चुके हैं और उन्हें पूरा भी कर चुके हैं हालाँकि, अपने बाकी एकेडमिक प्रोग्राम में आगे बढ़ने के बावजूद, फोर्थ सेमेस्टर का रिज़ल्ट अभी तक घोषित नहीं किया गया है

स्टूडेंट्स की चिंताएँ सिर्फ़ फोर्थ सेमेस्टर के रिज़ल्ट तक ही सीमित नहीं हैं कई स्टूडेंट्स ने यह भी बताया कि उन्हें उन सेमेस्टर के डिटेल्ड मार्क सर्टिफ़िकेट (DMCs) नहीं मिले हैं जिन्हें उन्होंने पहले ही सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है, जिसमें फ़र्स्ट, थर्ड और फ़िफ़्थ सेमेस्टर शामिल हैं

इसके अलावा, कई स्टूडेंट्स ने **समर्थ पोर्टल** के ज़रिए ₹1,000 से ₹3,000 तक का पेमेंट किया, जो गुरुग्राम यूनिवर्सिटी से जुड़ा ऑफ़िशियल पोर्टल है ये पेमेंट इसलिए किए गए क्योंकि पोर्टल पर फोर्थ सेमेस्टर एग्ज़ाम से जुड़ी रीअपीयर एंट्री दिख रही थीं बाद में स्टूडेंट्स को लगा कि ऐसे रीअपीयर एंट्री गलत थीं या उनके एग्ज़ाम का असली स्टेटस सही से नहीं दिखा रही थीं इस वजह से, कई स्टूडेंट्स अपने किए गए पेमेंट को लेकर परेशान हो गए गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के संबंधित अधिकारियों को कई ईमेल, एप्लीकेशन, रिक्वेस्ट और रिप्रेजेंटेशन देकर क्लेरिफिकेशन और पेमेंट किए गए अमाउंट का रिफंड मांगा गया स्टूडेंट्स की बार-बार कोशिशों के बावजूद, रिफंड से जुड़ी इन चिंताओं का कोई संतोषजनक हल नहीं निकला है स्टूडेंट्स का कहना है कि उन्होंने मदद के लिए हर उपलब्ध अधिकारी से संपर्क किया है हालांकि, उनके अनुसार, न तो सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के अधिकारियों और न ही गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने उनकी शिकायतों का कोई असरदार हल निकाला है

स्टूडेंट्स ने आगे कहा कि सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के अधिकारियों ने उन्हें बार-बार बताया कि यह मामला पूरी तरह से गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के अधिकार क्षेत्र में है और कॉलेज खुद कोई और कार्रवाई नहीं कर सकता इसलिए, स्टूडेंट्स को सलाह दी गई कि जब तक यह मामला हल नहीं हो जाता, वे सीधे यूनिवर्सिटी अधिकारियों से संपर्क करते रहें

इन लंबी देरी और अनसुलझी चिंताओं के कारण, BJMC कोर्स के स्टूडेंट्स को पढ़ाई में काफी अनिश्चितता, निराशा, चिंता और तनाव का सामना करना पड़ा है इस स्थिति ने हर स्टूडेंट पर अलग-अलग असर डाला है और उनके एजुकेशनल और प्रोफेशनल भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएँ पैदा कर दी हैं

स्टूडेंट्स बार-बार यह बुनियादी सवाल उठा रहे हैं कि उन्हें उस समस्या के लिए क्यों परेशान होना चाहिए जो कथित तौर पर यूनिवर्सिटी के एग्ज़ाम प्रोसेस में दिक्कतों की वजह से पैदा हुई है स्टूडेंट्स का कहना है कि उन्होंने अपने एग्ज़ाम ठीक से दिए, उनसे उम्मीद की जाने वाली सभी एकेडमिक ज़रूरतें पूरी कीं, और अपने रिज़ल्ट आने के लिए एक साल से ज़्यादा समय तक सब्र से इंतज़ार किया

इसलिए स्टूडेंट्स का कहना है कि उन्हें उन हालातों का नतीजा नहीं भुगतना चाहिए जो पूरी तरह से उनके कंट्रोल से बाहर थे वे अपनी शिकायतों का सही, समय पर और असरदार हल चाहते हैं ताकि वे अपने भविष्य को और नुकसान पहुँचाए बिना अपनी एकेडमिक और प्रोफेशनल यात्रा जारी रख सकें

मकसद और मांग के बारे में:

खास मांगों पर आने से पहले, प्रभावित स्टूडेंट्स की स्थिति को समझना ज़रूरी है स्टूडेंट्स कोई खास मदद, छूट या बहुत ज़्यादा राहत नहीं मांग रहे हैं वे सिर्फ़ वही चाहते हैं जो उनका हक है—जिन परीक्षाओं में वे पहले ही शामिल हो चुके हैं, उनके रिज़ल्ट की घोषणा, उनके एकेडमिक रिकॉर्ड जारी करना, और उनके एकेडमिक भविष्य की सुरक्षा स्टूडेंट्स ने उनसे उम्मीद की जाने वाली हर ज़िम्मेदारी पूरी की है उन्होंने क्लास में हिस्सा लिया, अपनी एकेडमिक ज़रूरतें पूरी कीं, यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित परीक्षाओं में शामिल हुए, और सभी तय फीस दी इसके बावजूद, वे उन हालातों की वजह से परेशान हैं जो उनके कंट्रोल से बिल्कुल बाहर हैं

मौजूदा मुद्दा सिर्फ़ देर से आए रिज़ल्ट का नहीं है यह स्टूडेंट्स के भविष्य, करियर, हायर एजुकेशन के मौकों और उनके सालों की कड़ी मेहनत से जुड़ा है अनिश्चितता का हर गुज़रता दिन उन्हें और नुकसान में डाल रहा है, जबकि उनके साथी एकेडमिक और प्रोफेशनली आगे बढ़ रहे हैं

कई स्टूडेंट्स अब मास्टर प्रोग्राम और दूसरी हायर स्टडीज़ में एडमिशन के मौके खोने की असली संभावना का सामना कर रहे हैं, सिर्फ़ इसलिए कि उनके रिज़ल्ट और एकेडमिक रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं हैं इस स्थिति ने उन स्टूडेंट्स में बहुत ज़्यादा मानसिक परेशानी, चिंता और निराशा पैदा कर दी है, जिन्होंने वह सब कुछ किया है जो उनसे करने की उम्मीद थी, लेकिन फिर भी वे सबसे बुनियादी एकेडमिक हक से वंचित हैं – यानी वे एग्ज़ाम जो उन्होंने पहले ही पूरे कर लिए हैं इन हालात में, स्टूडेंट्स सम्मान के साथ लेकिन मज़बूती से सक्षम अधिकारियों के सामने ये मांगें रखते हैं:

1. पेंडिंग रिजल्ट की तुरंत घोषणा

स्टूडेंट्स उन सभी पेंडिंग एग्ज़ाम रिजल्ट की तुरंत घोषणा की मांग करते हैं जो पहले ही सही तरीके से हो चुके हैं और पूरे हो चुके हैं किसी भी स्टूडेंट को उन एग्ज़ाम के नतीजों के लिए अनिश्चित काल तक इंतज़ार करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए जो बहुत पहले पूरे हो चुके हैं

2. सभी पेंडिंग DMC और मार्कशीट जारी करना

स्टूडेंट्स सभी पूरे हो चुके सेमेस्टर, जिसमें पहले, तीसरे और पांचवें सेमेस्टर शामिल हैं, के सभी डिटेल्ड मार्क्स सर्टिफिकेट (DMC), मार्कशीट और संबंधित एकेडमिक रिकॉर्ड की हार्ड कॉपी तुरंत जारी करने की मांग करते हैं ये डॉक्यूमेंट एडमिशन, नौकरी के मौके, स्कॉलरशिप, कॉम्पिटिटिव एग्ज़ाम और अलग-अलग एकेडमिक मकसद के लिए ज़रूरी हैं इन्हें लगातार रोके रखने से स्टूडेंट्स को पहले ही काफी मुश्किल हो रही है

2. दोबारा परीक्षा या री-एग्ज़ाम नहीं

स्टूडेंट्स साफ तौर पर कहते हैं कि उन्हें उन पेपर्स के लिए दोबारा परीक्षा देने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए जो पहले ही ठीक से हो चुके हैं और उन्होंने इसमें हिस्सा लिया है किसी भी एडमिनिस्ट्रेटिव, प्रोसिजरल या इंस्टीट्यूशनल गलती का इस्तेमाल उन बेकसूर स्टूडेंट्स पर बोझ डालने के लिए नहीं किया जा सकता जिन्होंने पहले ही अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी कर ली हैं इंस्टीट्यूशनल फेलियर का नतीजा उन लोगों पर नहीं डाला जा सकता जो इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं

3. स्टूडेंट्स के एकेडमिक भविष्य की सुरक्षा

अधिकारियों को यह पक्का करना चाहिए कि यूनिवर्सिटी या कॉलेज की वजह से हुई देरी की वजह से किसी भी स्टूडेंट को एडमिशन के मौके, एकेडमिक प्रोग्रेस, स्कॉलरशिप, इंटर्नशिप, नौकरी की संभावना या कोई दूसरा एजुकेशनल फायदा न खोना पड़े किसी एडमिनिस्ट्रेटिव झगड़े या इंस्टीट्यूशनल फेलियर में स्टूडेंट्स के भविष्य को कोलेटरल डैमेज नहीं बनने दिया जा सकता

4. री-अपीयर फीस के बारे में रिफंड और क्लैरिफिकेशन

जिन स्टूडेंट्स ने ऑफिशियल यूनिवर्सिटी पोर्टल के ज़रिए री-अपीयर एग्ज़ामिनेशन फीस जमा की है, उन्हें ऐसे पेमेंट के स्टेटस के बारे में साफ जानकारी दी जानी चाहिए जहाँ अगर ऐसी फीस गलतियों, गलत एंट्री या एडमिनिस्ट्रेटिव चूक की वजह से ली गई थी, तो संबंधित स्टूडेंट्स को बिना किसी देरी के पूरी रकम वापस करनी चाहिए

5. अथॉरिटीज़ से लिखित भरोसा

a) स्टूडेंट्स एक फॉर्मल लिखित बातचीत चाहते हैं जिसमें ये बातें बताई गई हों:

b) पेंडिंग रिज़ल्ट का सही स्टेटस;

c) रिज़ल्ट घोषित करने की टाइमलाइन;

d) DMCs और मार्कशीट जारी करने की टाइमलाइन;

e) समस्या को हल करने के लिए उठाए जा रहे कदम; और

f) यह पक्का करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं कि स्टूडेंट्स को आगे कोई पढ़ाई का नुकसान न हो

g) जब भी उनके डिपार्टमेंट द्वारा प्रोसेस शुरू हो, तो डिमांड से जुड़े सभी काम एक हफ़्ते के अंदर पूरे कर लिए जाने चाहिए

6. स्टूडेंट्स के हितों को बंधक नहीं बनाया जाना चाहिए

स्टूडेंट्स के पढ़ाई के हितों को किसी भी इंटरनल इंक्वायरी, इन्वेस्टिगेशन, एडमिनिस्ट्रेटिव कार्रवाई या अथॉरिटीज़ के बीच विवाद के नतीजे पर निर्भर नहीं बनाया जा सकता स्टूडेंट्स से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे उन मामलों में होने वाली देरी का खामियाजा भुगतें जिन पर उनका कोई कंट्रोल नहीं है और जिनमें उनका कोई हाथ नहीं है

7. तुरंत और असरदार हल

स्टूडेंट्स यूनिवर्सिटी और कॉलेज अथॉरिटीज़ से आदर के साथ अपील करते हैं कि वे सभी पेंडिंग मामलों को ट्रांसपेरेंट, फेयर और टाइम-बाउंड तरीके से हल करें स्टूडेंट्स ने सब्र से इंतज़ार किया है, रिप्रेजेंटेशन दिए हैं, ऑफिस गए हैं, ईमेल भेजे हैं, और बार-बार सही तरीकों से मदद मांगी है उनके सब्र को यह नहीं समझना चाहिए कि वे लगातार कोई एक्शन नहीं ले रहे हैं देरी का हर और दिन स्टूडेंट्स की एकेडमिक, प्रोफेशनल, फाइनेंशियल और इमोशनल मुश्किलों को और बढ़ाता है स्टूडेंट्स जो चाहते हैं वह कोई खास अधिकार नहीं है,

बल्कि एक बेसिक एकेडमिक अधिकार है—उनके रिजल्ट का समय पर ऐलान और उनके एकेडमिक रिकॉर्ड जारी होना इसलिए स्टूडेंट्स अथॉरिटीज़ से अपील करते हैं कि वे फेयरनेस, ज़िम्मेदारी और जल्दी से काम करें ताकि सालों की कड़ी मेहनत, लगन और एकेडमिक कोशिशें कंट्रोल से बाहर के हालात की वजह से बेकार न हो जाएं

स्टूडेंट्स ने समस्या का हल निकालने की शुरुआती कोशिशें के बारे में:

जैसे-जैसे समय बीतता गया और एग्ज़ाम हुए एक साल से ज़्यादा समय बीत गया, सेक्टर-9 PG .GOVT. कॉलेज के स्टूडेंट्स अपने एकेडमिक भविष्य को लेकर ज़्यादा परेशान और चिंतित हो गए यह चिंता खास तौर पर इसलिए ज़्यादा थी क्योंकि जिन एग्ज़ाम पर असर पड़ा था, वे उनके एकेडमिक प्रोग्राम के आखिरी स्टेज के थे जबकि उनका आखिरी सेमेस्टर पहले ही खत्म हो चुका था, पहले के सेमेस्टर के एग्ज़ाम के रिज़ल्ट संबंधित अधिकारियों की तरफ से कोई साफ वजह बताए बिना पेंडिंग रह गए

लंबे समय तक चली इस अनिश्चितता ने स्टूडेंट्स में बहुत ज़्यादा मानसिक तनाव पैदा कर दिया जो शुरू में एक टेम्परारी एडमिनिस्ट्रेटिव देरी लग रही थी, वह धीरे-धीरे एक गंभीर चिंता का विषय बन गई, जिससे उनकी पढ़ाई की तरक्की, भविष्य में एडमिशन, करियर के मौके और पूरी एकेडमिक स्थिति पर असर पड़ा

इन हालात में, दो स्टूडेंट्स, कपिल कौशिक और आर्यन दवे (BAJMC कोर्स के प्रभावित स्टूडेंट्स) ने रिजल्ट घोषित होने में बहुत ज़्यादा देरी के पीछे की असली वजह का पता लगाने के लिए प्रभावित स्टूडेंट्स की तरफ से खुद गुरुग्राम यूनिवर्सिटी जाने का फैसला किया उनका विज़िट सिर्फ़ क्यूरियोसिटी की वजह से नहीं था, बल्कि बढ़ती एंग्ज़ायटी, फ्रस्ट्रेशन और साथी स्टूडेंट्स के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना की वजह से था, जो एक साल से ज़्यादा समय से क्लैरिटी का इंतज़ार कर रहे थे

कपिल कौशिक के मामले में एक और चिंता थी, जिन्होंने री-अपीयर कैटेगरी में अपना नाम दिखने के बाद ऑफिशियल यूनिवर्सिटी पोर्टल

के ज़रिए री-अपीयर एग्ज़ामिनेशन फीस जमा कर दी थी इससे एग्ज़ाम के स्टेटस, पोर्टल पर दिखाई गई एंट्रीज़ की लेजिटिमेसी और स्टूडेंट्स पर पड़ने वाले फाइनेंशियल बोझ के बारे में और सवाल उठे

अपने विज़िट से पहले, स्टूडेंट्स ने सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के फैकल्टी मेंबर्स और रिप्रेजेंटेटिव्स से सलाह ली उन्हें बताया गया कि यह मामला यूनिवर्सिटी की एग्ज़ामिनेशन ब्रांच के डोमेन में आता है और उन्हें सीधे संबंधित एग्ज़ामिनेशन अथॉरिटीज़ से संपर्क करने के लिए कहा गया

हालांकि, यूनिवर्सिटी कैंपस पहुंचने और मदद मांगने की कोशिश करने पर, स्टूडेंट्स को बड़ी एडमिनिस्ट्रेटिव रुकावटों का सामना करना पड़ा साफ़ जवाब मिलने के बजाय, उन्हें बार-बार एक ऑफिस से दूसरे ऑफिस भेजा गया, बिना उनके रिज़ल्ट के स्टेटस के बारे में कोई काम की जानकारी दिए जैसा कि स्टूडेंट्स ने याद किया, उन्हें एक ऑफिस जाने के लिए कहा गया, लेकिन उन्हें कहीं और भेज दिया गया, और उसके बाद दूसरे ऑफिस में, जिसका नतीजा यह हुआ कि बिना किसी असरदार हल के लगातार रेफरेंस का सिलसिला चलता रहा यूनिवर्सिटी कैंपस में काफी समय बिताने के बावजूद, उन्हें किसी भी काबिल अथॉरिटी से साफ एक्सप्लेनेशन नहीं मिल पाया

स्टूडेंट्स ने आगे बताया कि कई बार उन्हें बताया गया कि संबंधित अधिकारी मौजूद नहीं हैं, मीटिंग में बिज़ी हैं, फोन कॉल पर बिज़ी हैं, या किसी और तरह से उनसे मिल नहीं पा रहे हैं ऑफिस के काम के घंटों में चालू रहने के बावजूद ये एक्सप्लेनेशन बार-बार दोहराए गए ऐसे उलटे-सीधे जवाबों से यह धारणा बनी कि स्टूडेंट्स को काबिल अथॉरिटी के सामने अपनी शिकायतें रखने का सही मौका नहीं दिया जा रहा है

स्टूडेंट्स खुद को एक ऐसे सिस्टम में फंसा हुआ पाते थे जहां जिम्मेदार अधिकारियों तक पहुंच लगातार सीमित थी अपने पेंडिंग रिजल्ट के बारे में एक्सप्लेनेशन मांगने की हर कोशिश का सामना प्रोसेस से जुड़ी रुकावटों, देरी या रीडायरेक्शन से होता था नतीजतन, वे एक ऐसे मुद्दे के बारे में जवाब पाने के सही और असरदार मौके से वंचित रह जाते थे जो सीधे उनके एकेडमिक भविष्य पर असर डालता था

यूनिवर्सिटी के लोगों से बातचीत के दौरान, स्टूडेंट्स को बताया गया कि कार्रवाई का एकमात्र तरीका प्रिंसिपल या किसी अधिकारी को लिखकर एप्लीकेशन देना है, जिसे फिर रजिस्ट्रार के पास विचार के लिए भेजा जाएगा उस समय भी, इस बारे में कोई भरोसा नहीं दिया गया कि समस्या कितने समय में हल हो जाएगी या क्या असल में कोई सुधार का कदम उठाया जाएगा

इससे भी ज़्यादा चिंता की बात यह थी कि कुछ अधिकारियों ने माना कि यह समस्या यूनिवर्सिटी के अधिकारियों को पहले से ही पता थी स्टूडेंट्स को बताया गया कि यह मामला पहले ही सीनियर अधिकारियों के ध्यान में आ चुका था और संबंधित अधिकारियों, जिनमें सबसे ऊँचे एडमिनिस्ट्रेटिव पदों पर बैठे लोग भी शामिल थे, को इस समस्या के बारे में पता था

इस बात से स्टूडेंट्स बहुत परेशान हुए अगर यह समस्या अधिकारियों को काफी समय से पता थी, तो वे समझ नहीं पा रहे थे कि इसे हल करने के लिए कोई असरदार कदम क्यों नहीं उठाए गए और बार-बार बताने और फॉलो-अप करने के बावजूद स्टूडेंट्स को परेशानी क्यों हो रही है

इसलिए स्टूडेंट्स ने रजिस्ट्रार से तुरंत मिलने की रिक्वेस्ट की ताकि वे पर्सनली प्रभावित स्टूडेंट्स को हो रही मुश्किलों के बारे में बता सकें और तुरंत दखल देने की मांग कर सकें हालांकि, उन्हें बताया गया कि ऐसी किसी भी मीटिंग की इजाज़त तब तक नहीं दी जाएगी, जब तक कि पहले प्री के ज़रिए एक फॉर्मल लिखित एप्लीकेशन जमा न कर दिया जाए एडमिनिस्ट्रेटिव प्रोसेस लिखा था

इन अनुभवों का कुल असर यह हुआ कि स्टूडेंट्स थक गए और निराश हो गए एक साल से ज़्यादा इंतज़ार करने, बार-बार चक्कर लगाने, कई ऑफिसों में जाने और सही तरीकों से मदद मांगने के बाद भी, उन्हें कोई जवाब नहीं मिला, कोई नतीजा नहीं मिला, और इस बात का कोई साफ़ इशारा भी नहीं मिला कि समस्या कब हल होगी

फिर भी, लंबी देरी से हुई निराशा, चिंता और इमोशनल तनाव के बावजूद, स्टूडेंट्स अपने एकेडमिक भविष्य को बचाने के लिए कानूनी और शांतिपूर्ण तरीके अपनाने के लिए पक्के इरादे वाले रहे उनकी कोशिशें किसी टकराव से नहीं, बल्कि एक ऐसे मुद्दे पर क्लैरिटी, अकाउंटेबिलिटी और इंसाफ पाने की सच्ची इच्छा से प्रेरित थीं, जिसने पहले ही उनकी पढ़ाई के सालों के सफ़र पर असर डाला था

गुरुग्राम यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स का कलेक्टिव विज़िट और एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर से मीटिंग के बारे में:

जब पेंडिंग रिजल्ट्स को लेकर अनिश्चितता बनी रही, तो सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज में BGMC कोर्स के स्टूडेंट्स ने मिलकर तय किया

कि आगे एक्शन लेना ज़रूरी है पहले ही इनफॉर्मल पूछताछ पूरी हो जाने और अपने रिजल्ट्स के बारे में कोई काम का क्लैरिफिकेशन न मिलने के बाद, स्टूडेंट्स ने अपने पेरेंट इंस्टीट्यूशन के फैकल्टी मेंबर्स से गाइडेंस लेने का फैसला किया

इसके अनुसार, **01 जून 2026** को, कई प्रभावित स्टूडेंट्स सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के संबंधित फैकल्टी मेंबर्स से मिले और उन्हें उन मुश्किलों के बारे में बताया जो उन्हें अपने रिजल्ट्स के लंबे समय तक घोषित न होने और उनके एकेडमिक रिकॉर्ड जारी न होने के कारण हो रही थीं

इन चर्चाओं के दौरान, स्टूडेंट्स को बताया गया कि यह मामला मुख्य रूप से यूनिवर्सिटी एग्ज़ामिनेशन ब्रांच के अधिकार क्षेत्र में आता है और उनकी चिंताओं को दूर करने के लिए सबसे सही अथॉरिटी **श्री अनूप गोयल, कंट्रोलर ऑफ़ एग्ज़ामिनेशन्स, गुरुग्राम यूनिवर्सिटी** होंगे स्टूडेंट्स को बताया गया कि सिर्फ़ कंट्रोलर ऑफ़ एग्ज़ामिनेशन ही उनके रिज़ल्ट की स्थिति और उनके एकेडमिक रिकॉर्ड पर असर डालने वाले मामलों के बारे में साफ़-साफ़ बता पाएंगे

इस सलाह पर अमल करते हुए, स्टूडेंट्स ने उसी दिन गुरुग्राम यूनिवर्सिटी जाने का फ़ैसला किया

स्टूडेंट होने और पैसे की तंगी का सामना करने के बावजूद, प्रभावित स्टूडेंट्स ने मिलकर यूनिवर्सिटी तक आने-जाने का इंतज़ाम किया आने-जाने का खर्च उठाने के लिए अलग-अलग स्टूडेंट्स ने पैसे दिए, और ग्रुप सिर्फ़ एक ऐसे मामले के जवाब पाने के मकसद से साथ गया, जिसने उनकी एकेडमिक ज़िंदगी के एक साल से ज़्यादा समय को पहले ही प्रभावित कर दिया था

गुरुग्राम यूनिवर्सिटी पहुँचने पर, स्टूडेंट्स ने कंट्रोलर ऑफ़ एग्ज़ामिनेशन का ऑफ़िस ढूंढने की कोशिश की लेकिन, साफ़ दिशा-निर्देश मिलने के बजाय, उन्हें काफ़ी कन्फ़्यूज़न का सामना करना पड़ा अलग-अलग अधिकारियों और स्टाफ़ मेंबर्स ने संबंधित अथॉरिटी की जगह के बारे में अलग-अलग जानकारी दी कुछ ने उन्हें एक कमरे में भेजा, जबकि दूसरों ने कहीं और, जिससे अनिश्चितता और और देरी हुई

स्टूडेंट्स, जो पहले से ही अपने रिज़ल्ट में लंबी देरी से पैदा हुई चिंता और निराशा से परेशान थे, सही ऑफ़िस की तलाश में यूनिवर्सिटी परिसर के अलग-अलग हिस्सों में भटकते रहे साफ़ गाइडेंस न होने से उनकी चिंताएँ और बढ़ गईं और यह सोच और पक्की हो गई कि ज़िम्मेदार अधिकारियों तक पहुँचना बेवजह मुश्किल है

आखिरकार, स्टूडेंट्स को बताया गया कि एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर शायद एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक में मौजूद होंगे वहाँ पहुँचने पर, उन्हें बताया गया कि संबंधित अधिकारी मीटिंग में बिज़ी हैं और अवेलेबल नहीं हैं स्टूडेंट्स को आगे सलाह दी गई कि वे बाद में वापस आएँ, भले ही वे खास तौर पर एक ऐसे मामले के बारे में क्लैरिफिकेशन लेने के लिए यूनिवर्सिटी गए थे जो एक साल से ज़्यादा समय से अनसुलझा था हालाँकि, कुछ देर बाद उन्हें अथॉरिटी ने एग्ज़ामिनेशन अथॉरिटी यानी 'नवीन गोयल : एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर अथॉरिटी' से मिलने के लिए 10 मिनट की मीटिंग की इजाज़त दे दी तो उनके हिसाब से सिर्फ़ 10 मिनट में उन्हें अपनी परेशानियां, अपना टेंशन, एंग्ज़ायटी, डिप्रेशन बताना

था, जिससे वे लंबे समय से परेशान थे क्योंकि उनके रिज़ल्ट टाइम पर नहीं आए थे, इसके अलावा उन्हें अपने रिज़ल्ट से जुड़ी अपनी कई प्रॉब्लम के बारे में भी बताना था ये सब 10 मिनट में अथॉरिटी को दिए गए टाइम के हिसाब से बताना था, इस समय सच में नहीं पता कि अथॉरिटी असल में उनके बारे में या उन स्टूडेंट्स के बारे में क्या सोच रही थी जो सिर्फ़ अपना रिज़ल्ट चाहते थे, कम से कम उन्हें उनकी बात शांति से आखिर तक सुननी चाहिए थी लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया इन बातों पर ज़ोर दिए बिना, मौके की अहमियत को समझते हुए, स्टूडेंट्स ने जल्दी से ऐसे रिप्रेजेंटेटिव चुने जो पूरी क्लास की परेशानियां अथॉरिटी के सामने रखेंगे स्टूडेंट्स समझ गए थे कि बहुत कम टाइम में उन्हें कई परेशान स्टूडेंट्स की एंग्ज़ायटी, अनिश्चितता, पढ़ाई में मुश्किल और पैसे के बोझ के बारे में बताना होगा

शुरू में, तीन स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव चुने गए, जिनके नाम *कपिल कौशिक, भूमिका और प्रियंका बिष्ट* थे लेकिन, ऑफिस के एंट्रेंस पर पहुंचने पर, सिर्फ़ दो रिप्रेजेंटेटिव को अंदर जाने दिया गया इसलिए, प्रियंका बिष्ट बाहर ही रहीं, जबकि बाकी रिप्रेजेंटेटिव प्रभावित स्टूडेंट्स की शिकायतें बताने के लिए ऑफिस चले गए

इसके बाद हुई मीटिंग स्टूडेंट्स के लिए एक साल से ज़्यादा समय की अनिश्चितता, बार-बार फॉलो-अप और अपने एकेडमिक भविष्य के बारे में सही जवाब पाने की नाकाम कोशिशों के बाद, यूनिवर्सिटी के किसी सीनियर अधिकारी के सामने अपनी चिंताएं रखने का पहला सीधा मौका था

जब मीटिंग शुरू हुई, तो वहां मौजूद लोगों में स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव, एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर और एक और शामिल थे एग्ज़ामिनेशन ब्रांच से जुड़े उनके यूनिवर्सिटी के अधिकारी उस बातचीत की डिटेल्स और उसमें दिए गए भरोसे अगले सेक्शन में दिए गए हैं

एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर से बातचीत और उसके बाद की घटनाएँ

उस समय जब उन स्टूडेंट्स को अथॉरिटी ऑफिस की तरफ ले जाया जा रहा था, तो वहाँ के एक मेंबर ने कहना शुरू किया, 'यह बात अथॉरिटी को बहुत पहले से पता थी लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया' एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर के ऑफिस में घुसने पर, स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव, कपिल कौशिक और भूमिका ने अपना परिचय दिया और बताया कि वे सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के BGMC कोर्स के प्रभावित स्टूडेंट्स को रिप्रेजेंट कर रहे थे, जिनके चौथे सेमेस्टर के रिजल्ट एक साल से ज़्यादा समय से पेंडिंग थे

ऑफिस के अंदर बातचीत - **ऑफिस के अंदर बातचीत (जैसा कि स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव ने याद किया)**

स्टूडेंट्स और एग्ज़ामिनेशन अथॉरिटी के बीच बातचीत में चार लोग थे –

• कपिल कौशिक – एक स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव

• भूमिका – एक स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव

• नवीन गोयल – गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के एग्ज़ामिनेशन अथॉरिटी

• एक कम्प्यूटर - 'जो कपिल के बोलते समय बातचीत में कूद पड़े'

कपिल कौशिक: गुड मॉर्निंग, सर

नवीन गोयल: गुड मॉर्निंग आप कौन हैं?

कपिल कौशिक: सर, हम सेक्टर-9 गवर्नमेंट कॉलेज के स्टूडेंट हैं और उन स्टूडेंट में से हैं जिन्हें अपना फोर्थ सेमेस्टर रिजल्ट नहीं मिला है हमने एक साल से ज़्यादा समय पहले एग्ज़ाम दिया था, लेकिन हमारा रिज़ल्ट अभी तक डिक्लेयर नहीं हुआ है स्टूडेंट्स अपने फ्यूचर और मास्टर्स एडमिशन को लेकर बहुत परेशान हैं, जो 8 जून 2026 से शुरू होने वाले हैं

नवीन गोयल: हाँ, हाँ हमें आपकी और आपके कॉलेज की चिंता के बारे में पता है हम इस मामले के बारे में बहुत पहले से जानते हैं और इस पर कई बार बात भी कर चुके हैं देखिए, आपके रिज़ल्ट को लेकर असली प्रॉब्लम यह है कि, बदकिस्मती से, आपकी आंसर बुक खो गई हैं हमें नहीं पता कि वे कहाँ गईं, या वे हम तक पहुँचीं भी या नहीं सच कहूँ तो, हमें ठीक से नहीं पता कि उनके साथ क्या हुआ हमने आपके कॉलेज को इस बारे में पहले ही बता दिया है जब हमने आपकी आंसर बुक खो दी हैं, तो हम रिज़ल्ट कैसे डिक्लेयर कर सकते हैं? यह इतना आसान है तो आपकी चिंता के बारे में, सिर्फ़ दो ऑप्शन हैं पहला ऑप्शन यह है कि आपको दोबारा एग्ज़ाम देना होगा दूसरा ऑप्शन भी FIR के ज़रिए इस मामले को सुलझाने से जुड़ा है हम इस मामले के लिए ज़िम्मेदार लोगों के बारे में इन्क्वायरी करेंगे और FIR फाइल करेंगे पुलिस इन्वेस्टिगेट करेगी और असली दोषी की पहचान करेगी लेकिन, उस प्रोसेस में कितना टाइम लगेगा, उसका क्या नतीजा होगा, और आपकी चिंता कब तक दूर होगी, मैं अभी नहीं कह सकता एक बार वह प्रोसेस पूरा हो जाएगा, तो आपको आपका रिजल्ट ज़रूर मिल जाएगा इन ऑप्शन के अलावा, मैं और कुछ नहीं कर सकता

कपिल कौशिक: सर, आप कह रहे हैं कि आप FIR करेंगे लेकिन किसके खिलाफ? उस डिपार्टमेंट के खिलाफ जिसने हमारी आंसर बुक खो दी? और सर, अगर आप FIR करते हैं, तो इसमें बहुत टाइम लग सकता है फिर हमें मास्टर कोर्स में एडमिशन कैसे मिलेगा? अगर यूनिवर्सिटी हमसे हमारी मार्कशीट मांगती हैं, तो हम उन्हें क्या दिखाएंगे? हमारे टाइम, हमारे फ्यूचर और हमारे करियर के मौकों के नुकसान

की भरपाई कौन करेगा? अगर हमारा रिजल्ट आने से पहले एडमिशन बंद हो जाते हैं, तो उसके लिए कौन ज़िम्मेदार होगा?

नवीन गोयल: जो मैंने आपको पहले ही बताया है, उसके अलावा हम कुछ नहीं कर सकते अगर आप इन ऑप्शन के अलावा कुछ और उम्मीद कर रहे हैं, तो मैं वह नहीं दे सकता

भुनिका: सर, सिर्फ़ एक इंस्टीट्यूशनल गलती की वजह से स्टूडेंट्स को अपने पूरे करियर में क्यों परेशान होना पड़े? प्लीज़ हमारी चिंताएं भी सुनें हम यह भी बताना चाहते हैं कि हम असल में क्या चाहते हैं नवीन गोयल: ठीक है अगर आप इन ऑप्शन से सहमत नहीं हैं, तो हम वाइस-चांसलर के सामने एक मीटिंग करेंगे वहां जो भी फैसला होगा, वह फाइनल होगा 12 जून को मीटिंग होगी उसके लिए तैयार रहें कपिल कौशिक: सर, मास्टर कोर्स के एडमिशन 8 जून से शुरू होंगे हमें यूनिवर्सिटी से कुछ लिखकर चाहिए ताकि हम एडमिशन के समय उसे दिखा सकें और बिना देर किए अपनी पढ़ाई जारी रख सकें नवीन गोयल: मेरी बात सुनिए मैं कुछ नहीं लिखने वाला मैं अकेला अथॉरिटी नहीं हूं कपिल कौशिक: सर, तो अगर हमारे हाथ में कुछ नहीं होगा तो हमें एडमिशन कैसे मिलेगा? कुछ लिखकर होना चाहिए जिसे हम यूनिवर्सिटी और कॉलेज को दिखा सकें नवीन गोयल: क्या आपको लगता है कि सिर्फ मेरी लिखी हुई एप्लीकेशन जमा करने से आपको एडमिशन मिल जाएगा? कपिल कौशिक: सर, अगर आप हमारे लिए कुछ करेंगे, तो हम निश्चित रूप से उसका सपोर्ट करेंगे लेकिन अगर कुछ नहीं दिया गया, तो हम कैसे जारी रखेंगे? एक साल से ज़्यादा हो गया है (अचानक कंप्यूटर ऑपरेटर बातचीत में कूद पड़ा)

कंप्यूटर ऑपरेटर: एक साल हो गया है, है ना? अगर एक साल और लग गया तो तुम्हारा क्या होगा?

कपिल कौशिक: सर, यह क्या है? इसमें कई स्टूडेंट्स का करियर जुड़ा है हमसे ऐसी बात कैसे कही जा सकती है?

नवीन गोयल: बदतमीज़ी मत करो! बाहर जाओ, दस मिनट हो चुके हैं

कपिल कौशिक: सर, हम बदतमीज़ी नहीं कर रहे हैं, गलत बात आपके कलीग ने कही थी, हमारी नहीं

नवीन गोयल: बस बाहर जाओ मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि हम 12 जून को आपके स्टूडेंट्स से मिलेंगे

कपिल कौशिक: सॉरी सर, अगर आपको लगा कि हम गलत बिहेव कर रहे थे

भुनिका: सर, अगर हमें लिखकर कुछ नहीं मिला, तो हमें एडमिशन कैसे मिलेगा? अगर हमें एडमिशन नहीं मिला, तो हमारा करियर अटक सकता है इसके लिए कौन ज़िम्मेदार होगा?

नवीन गोयल: ओह, तो आप एक्शन लेना चाहते हैं? तो जो चाहें करें, आप हमारे खिलाफ FIR करना चाहते हैं? चाहें तो केस फाइल करें जो भी आपको सही लगे, करें

लेकिन जहां तक मेरा सवाल है, मैं और कुछ नहीं कर सकता मुझे जो कुछ भी बताने के लिए कहा गया था, मैंने आपको बता दिया है

कपिल कौशिक: सर, प्लीज़ हमें कुछ लिखकर डॉक्यूमेंट दें

नवीन गोयल: मैंने आपको पहले ही बता दिया है बस अब चले जाइए

घुनिका: सॉरी सर, अगर आपको बुरा लगा हो

कपिल कौशिक: सॉरी सर

नवीन गोयल: मीटिंग खत्म हो गई है प्लीज़ चले जाइए

ऑफिस से निकलने के बाद, स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव ने बाहर इंतज़ार कर रहे दूसरे परेशान स्टूडेंट्स को जानकारी दी जब बातचीत की डिटेल्स शेयर की गईं, तो स्टूडेंट्स ने बड़ी चिंता से सुना कई स्टूडेंट्स ने यह जानकर निराशा जताई कि कोई लिखित भरोसा नहीं दिया गया था और इतनी ज़्यादा देरी होने के बावजूद कोई तुरंत हल नहीं निकाला गया था कई स्टूडेंट्स को लगा कि एक साल से ज़्यादा इंतज़ार करने के बाद, उन्हें एक बार फिर अपने एकेडमिक भविष्य के बारे में बिना किसी पक्के इरादे के इंतज़ार करने के लिए कहा जा रहा है फिर भी, अपनी निराशा और फ्रस्ट्रेशन के बावजूद, स्टूडेंट्स ने यूनिवर्सिटी कैंपस में अपनी मौजूदगी के दौरान शांति और व्यवस्था बनाए रखी वे मामले का कानूनी, सम्मानजनक और कंस्ट्रक्टिव हल ढूंढते रहे आखिरकार, अधिकारियों के सामने अपनी चिंताएं बताने के बाद

जब वे नवीन गोयल के ऑफिस से बाहर आए, तो कपिल और भूमिका ने वहां मौजूद सभी स्टूडेंट्स को कमरे के अंदर हुई हर बात के बारे में बताया यह सुनने के बाद, स्टूडेंट्स बताए गए ऑप्शन से सहमत होने को तैयार नहीं थे उन्होंने आपस में इस मामले पर चर्चा करना शुरू कर दिया और कुछ समय बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि जब तक उन्हें लिखित में कुछ नहीं मिल जाता, वे वहीं डटे रहेंगे उनका मानना था कि उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए एडमिशन लेने के लिए एक लिखित आश्वासन चाहिए क्योंकि अधिकारियों ने जो प्रोसेस बताया था, उसमें बहुत समय लग सकता था, इसलिए उन्हें लगा कि सब कुछ लिखित में दिया जाना चाहिए

इसलिए, स्टूडेंट्स वहीं रुक गए कुछ देर बाद, नवीन गोयल अपने ऑफिस से बाहर आए और यूनिवर्सिटी कैंपस में घुस गए एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर को अपने पास आते देख, स्टूडेंट्स ने अपनी आवाज़ें उठानी शुरू कर दीं और अपनी चिंताएँ बताने लगे जैसे ही नवीन गोयल पास आए, हर स्टूडेंट ने अपनी सुरक्षा के लिए और अधिकारियों की बातों का सबूत रखने के लिए अपने फ़ोन का कैमरा खोल लिया

उनके कैमरों में रिकॉर्डिंग हो रही थी, स्टूडेंट्स ने सवाल पूछना शुरू कर दिया उन्होंने बार-बार कहा कि उन्हें सब कुछ लिखित में चाहिए और जब तक उन्हें कुछ लिखित आश्वासन नहीं मिल जाता, वे नहीं जाएँगे उन्होंने समझाया कि उन्हें ऐसा डॉक्यूमेंट उन यूनिवर्सिटीज़ को दिखाने के लिए चाहिए जहाँ वे आगे की पढ़ाई के लिए एडमिशन लेना चाहते हैं

एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर, नवीन गोयल, लोगों के इकट्ठा होने और बार-बार की माँगों से साफ़ तौर पर परेशान दिखे कुछ देर स्टूडेंट्स की बात सुनने के बाद, उन्होंने कहा कि वे कुछ भी लिखित में नहीं देंगे उन्होंने बताया कि इस मामले के लिए वे अकेले ज़िम्मेदार नहीं हैं और उन्होंने स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव को पहले ही मौजूद ऑप्शन बता दिए हैं उन्होंने आगे कहा कि अगर स्टूडेंट उन ऑप्शन से खुश नहीं हैं, तो वे उन्हें एक रिटन एप्लीकेशन दे सकते हैं, जिसे वे हायर अथॉरिटी को भेज देंगे इसके अलावा, उन्होंने कहा कि वे और कुछ नहीं कर सकते उन्होंने स्टूडेंट से यूनिवर्सिटी कैंपस का डेकोरम बनाए रखने, चिल्लाने से बचने और शांत रहने की भी रिक्वेस्ट की

यह सुनने के बाद, एक स्टूडेंट ने कहा कि उन्हें तुरंत एक रिटन एश्योरेंस चाहिए ताकि 12 जून को या उसके बाद होने वाले डेवलपमेंट के बारे में उनके पास कुछ पक्का हो स्टूडेंट ने 12 जून के एक हफ्ते के अंदर रिजल्ट पाने की इच्छा जताई और अपनी अलग-अलग चिंताएं बताईं

इसके बाद, पूजा कार्की नाम की एक स्टूडेंट बातचीत रिकॉर्ड करते हुए ज़मीन पर बैठ गईं और नवीन गोयल से बात की उन्होंने कहा कि

अथॉरिटी स्टूडेंट की चिंताओं को नहीं समझ रही हैं उन्होंने आगे कहा कि अथॉरिटी ने खुद माना है कि आंसर बुक गलत जगह पर रख दी गई थीं और इस वजह से दोबारा एग्ज़ाम कराया जा सकता है उन्होंने सवाल किया कि अधिकारियों की कही गई गलती के लिए स्टूडेंट्स को क्यों भुगतना चाहिए उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि स्टूडेंट्स न तो कोई एक्स्ट्रा फीस देंगे और न ही आगे कोई एग्ज़ाम देंगे क्योंकि यह मामला अधिकारियों की लापरवाही की वजह से उठा है

पूजा ने आगे कहा कि अधिकारियों ने एक साल से ज़्यादा समय तक इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया उनके मुताबिक, उस दौरान कोई असरदार एक्शन नहीं लिया गया, और इसलिए स्टूडेंट्स के लिए यह मानना मुश्किल था कि 12 जून के बाद अचानक कोई सही एक्शन लिया जाएगा उन्होंने बार-बार रिक्वेस्ट की कि कुछ लिखकर भरोसा दिया जाए

यह सुनकर, नवीन गोयल और ज़्यादा परेशान हो गए और उन्होंने उन्हें अपना कैमरा नीचे करने को कहा उन्होंने दूसरों को स्टूडेंट्स को रिकॉर्ड करने और यह पक्का करने को कहा कि मौजूद सभी स्टूडेंट्स के चेहरे दिख रहे हों उन्होंने कहा कि अगर स्टूडेंट्स नाखुश हैं, तो वे कोई भी लीगल एक्शन लेने के लिए आज़ाद हैं, जिसमें FIR दर्ज करना या कोई भी ऐसा तरीका अपनाना शामिल है जिससे उन्हें लगता है कि इंसाफ मिलेगा उन्होंने दोहराया कि इस मामले पर सिर्फ़ 12 जून को बात होगी और जो पहले ही बताया जा चुका है, उसके अलावा वह कुछ नहीं कर सकते

पूजा जवाब दिया कि अथॉरिटीज़ इस सिचुएशन के लिए ज़िम्मेदार हैं और फिर से लिखकर भरोसा मांगा जवाब में, नवीन गोयल ने उन्हें चिल्लाने से मना किया और कहा कि उनके बर्ताव के खिलाफ़ लीगल एक्शन लिया जा सकता है उन्होंने आगे कहा कि स्टूडेंट्स जो चाहें कर सकते हैं लेकिन वह आगे कुछ नहीं कर सकते फिर उन्होंने स्टूडेंट्स को एरिया छोड़ने का निर्देश दिया और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें हटाने के लिए सिक्योरिटी वालों को बुलाया

कुछ देर बाद, जब स्टूडेंट्स को लगा कि आगे कोई बातचीत नहीं होगी, तो वे शांति से यूनिवर्सिटी कैंपस से चले गए

कैंपस से निकलने और घटना पर सोचने के बाद,

स्टूडेंट्स ने अपने शेयर किए विचार के बारे में :

• कपिल कौशिक, जो स्टूडेंट्स के रिप्रेजेंटेटिव में से एक थे और जो ऑफिस के अंदर अथॉरिटीज़ से मिले थे, ने कहा कि नवीन गोयल ने उन्हें साफ-साफ बताया था कि कुछ भी लिखकर नहीं दिया जाएगा कपिल ने आगे कहा कि उन्होंने अथॉरिटीज़ को समझाया था कि स्टूडेंट्स को मास्टर प्रोग्राम में एडमिशन के लिए डॉक्यूमेंटेशन की ज़रूरत होती है उन्होंने यह भी कहा कि यूनिवर्सिटी के एक एम्प्लॉई ने उन्हें बताया था कि अथॉरिटीज़ को इस मामले के बारे में काफी समय से पता था लेकिन उन्होंने कोई असरदार एक्शन नहीं लिया था कपिल के मुताबिक, अब एकमात्र सॉल्यूशन जो सोचा जा रहा है, वह है री-एग्ज़ामिनेशन कपिल ने आगे इस मामले की आगे की टाइमलाइन को लेकर अनिश्चितता के बारे में चिंता जताई उन्होंने कहा कि अधिकारी खुद यह नहीं बता पा रहे थे कि इस प्रोसेस में कितना समय लगेगा उन्होंने सवाल किया कि अगर देरी की वजह से स्टूडेंट्स को मास्टर प्रोग्राम में एडमिशन का मौका गंवाना पड़ा तो उनका क्या होगा

भूमिका, जो स्टूडेंट रिप्रेजेंटेटिव में से एक थीं, ने कहा कि नवीन गोयल ने स्टूडेंट्स से साफ तौर पर कहा था कि वे जो भी सही समझें, करें, जिसमें अगर वे चाहें तो लीगल केस भी कर सकते हैं उन्होंने सवाल किया कि अगर मामला सच में गलत जगह पर रखी आंसर शीट से जुड़ा था, तो स्टूडेंट्स को एक साल से ज़्यादा समय तक बिना जानकारी के क्यों रखा गया उन्होंने आगे कहा कि अधिकारी स्टूडेंट्स के सवालों का सीधा जवाब देने से बच रहे थे और बस यही दोहरा रहे थे कि वे आगे कुछ नहीं कर सकते और लिखकर कुछ नहीं देंगे भूमिका के मुताबिक, अधिकारी अपनी गलतियों को मानने से इनकार कर रहे थे और इसके बजाय कोई ठोस हल बताए बिना प्रोसेस से जुड़ी बातों पर ध्यान दे रहे थे उन्होंने यह भी कहा कि अधिकारियों ने सुझाव दिया था कि स्टूडेंट्स एडमिशन प्रोसेस के दौरान अपनी एप्लीकेशन की एक कॉपी दिखा सकते हैं, लेकिन कोई फॉर्मल लिखित भरोसा नहीं दिया जाएगा स्टूडेंट्स को जो जवाब मिला, उससे वे खुश नहीं थे फिर भी,

अपनी चिंता बताने के बाद, सभी स्टूडेंट्स शांति से यूनिवर्सिटी कैंपस से चले गए और आगे की कार्रवाई के लिए 12 जून 2026 तक इंतज़ार करने का फ़ैसला किया

UGC के ज़रूरी नियम के बारे में :

1. स्टूडेंट्स को समय पर परीक्षा और रिज़ल्ट घोषित करने का अधिकार है

1. UGC स्टूडेंट्स एंटाइटलमेंट गाइडलाइंस, 2012 के तहत, स्टूडेंट्स के ये अधिकार हैं:

2. समय पर परीक्षा

3. इंस्टिट्यूशन द्वारा पब्लिश किए गए एकेडमिक कैलेंडर/प्रॉस्पेक्ट्स के अनुसार रिज़ल्ट घोषित करना

4. यह आपकी स्थिति में खास तौर पर ज़रूरी है क्योंकि अगर यूनिवर्सिटी ने एक साल से ज़्यादा समय तक रिज़ल्ट घोषित नहीं किया है, तो यह माना जा सकता है कि इंस्टिट्यूशन UGC गाइडलाइंस के अनुसार समय पर रिज़ल्ट घोषित करने में फेल रहा है

2. डिग्री 180 दिनों के अंदर दी जानी चाहिए

5. UGC ने बार-बार हायर एजुकेशन इंस्टिट्यूशन को रिज़ल्ट घोषित होने के 180 दिनों के अंदर डिग्री और फ़ाइनल सर्टिफ़िकेट देने का निर्देश दिया है

6. इसका मतलब है:

7. रिजल्ट घोषित डिग्री/DMC/सर्टिफ़िकेट तय समय के अंदर मिल जाना चाहिए

8. यह नियम यूनिवर्सिटी को रिज़ल्ट घोषित करने में अनिश्चित काल तक देरी करने का अधिकार नहीं देता है

3. यूनिवर्सिटी को अपने एकेडमिक कैलेंडर का पालन करना होगा

9. UGC ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि एग्ज़ाम और रिज़ल्ट की घोषणा इंस्टीट्यूशन के एकेडमिक कैलेंडर के हिसाब से होनी चाहिए स्टूडेंट्स को यह उम्मीद करने का हक है कि इन टाइमलाइन का पालन किया जाएगा

10. लेकिन अब, BGMC, सेक्टर-9 PG कॉलेज के मामले में:

1. चौथे सेमेस्टर के एग्ज़ाम मई 2025 में हुए थे

2. एक साल से ज़्यादा समय बीत चुका है

3. रिज़ल्ट अभी तक घोषित नहीं हुए हैं

4. स्टूडेंट्स एडमिशन और हायर स्टडीज़ नहीं कर पा रहे हैं

5. यूनिवर्सिटी UGC स्टूडेंट्स एंटाइटलमेंट गाइडलाइंस, 2012 के मुताबिक समय पर रिज़ल्ट घोषित करने में नाकाम रही है

6. इतनी देर से स्टूडेंट्स की हायर एजुकेशन और नौकरी के मौकों पर गंभीर असर पड़ रहा है, जिसे UGC ने खुद नुकसानदायक माना है

7. यूनिवर्सिटी को एक लिखित टाइमलाइन और तुरंत समाधान देना चाहिए, क्योंकि स्टूडेंट्स को अनिश्चित एकेडमिक अनिश्चितता में नहीं छोड़ा जा सकता 8. स्टूडेंट्स अधिकारियों के दोबारा एग्ज़ाम कराने का कड़ा विरोध कर रहे हैं और चाहते हैं कि उनके रिजल्ट एक हफ्ते के अंदर घोषित किए जाएं, क्योंकि अब एक साल से ज़्यादा हो गया है

प्राधिकरण द्वारा प्रतिक्रिया के बारे में :

सेक्टर 9 गवर्नमेंट कॉलेज के चौथे सेमेस्टर के स्टूडेंट्स के एग्ज़ाम रिजल्ट के बारे में यूनिवर्सिटी की जानकारी एक ही बयान पर आधारित थी यूनिवर्सिटी ने स्टूडेंट्स को बताया कि उनकी आंसर शीट किसी तरह खो गई हैं और वे उन्हें वापस नहीं पा सकते इस वजह से रिजल्ट घोषित नहीं हो पाए

स्टूडेंट्स की चिंता सीधी थी: उन्हें बस अपने रिजल्ट चाहिए थे हालांकि, यूनिवर्सिटी ने बस इतना कहा कि वे "मामले को देखेंगे "

यूनिवर्सिटी से इतना खराब और बेपरवाह जवाब मिलने के बाद, स्टूडेंट्स ने सीधे यूनिवर्सिटी जाकर संबंधित अधिकारियों से मिलने का फैसला किया, यह मानते हुए कि उन्हें अपने एकेडमिक भविष्य के बारे में जवाब मांगने का अधिकार है

1 जून, 2026 को, स्टूडेंट्स एक साथ गुरुग्राम यूनिवर्सिटी गए क्लास के लगभग 15 से 20 स्टूडेंट्स का एक ग्रुप यूनिवर्सिटी कैंपस में इकट्ठा हुआ और संबंधित अधिकारियों से मिलने की कोशिश की हालांकि, वहां मौजूद अधिकारियों ने शुरू में उन्हें भगाने की कोशिश की स्टूडेंट्स के लगातार ज़ोर देने और दबाव डालने के बाद, अधिकारी आखिरकार उनकी बात सुनने के लिए मान गए यूनिवर्सिटी ने कहा कि उस समय सिर्फ़ एक ही प्रैक्टिकल ऑप्शन था: स्टूडेंट्स को दोबारा एग्ज़ाम देना होगा क्योंकि यूनिवर्सिटी उनकी आंसर बुक के रिकॉर्ड नहीं निकाल पाई क्योंकि स्टूडेंट्स सिर्फ़ इसलिए दोबारा एग्ज़ाम देने को तैयार नहीं थे क्योंकि कहा जाता है कि उनकी आंसर बुक खो गई थी, इसलिए यूनिवर्सिटी ने दूसरा ऑप्शन दिया यह ऑप्शन गुरुग्राम यूनिवर्सिटी एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर ने दिया था दूसरा ऑप्शन यह था कि अगर स्टूडेंट्स दोबारा एग्ज़ाम देने से मना करते हैं, तो यूनिवर्सिटी इस मामले में FIR दर्ज कराएगी अधिकारियों ने आगे कहा कि FIR के बाद मामले की जांच की जाएगी, और जांच के नतीजे के आधार पर आगे की कार्रवाई तय की जाएगी हालांकि, यूनिवर्सिटी ने साफ़ कहा कि कोई भी यह अंदाज़ा नहीं लगा सकता कि ऐसी जांच में कितना समय लगेगा कोई भी नतीजे का अंदाज़ा नहीं लगा सकता कोई भी गारंटी नहीं दे सकता कि स्टूडेंट्स को उनके रिज़ल्ट, चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट, या डिग्री मिलने में कितना समय लगेगा अधिकारियों ने बार-बार कहा कि जांच की टाइमलाइन पक्की नहीं है और पूरी तरह से जांच प्रोसेस पर निर्भर है इसके बाद, यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने स्टूडेंट्स को जो मुख्य नतीजा बताया, वह यह था कि उन्हें या तो दोबारा एग्ज़ाम देना होगा या FIR और उसके बाद की जांच के नतीजे का इंतज़ार करना होगा

चौथे सेमेस्टर के एग्ज़ाम सेक्टर-9 गवर्नमेंट कॉलेज ने कराए थे, जो गुरुग्राम यूनिवर्सिटी से जुड़ा हुआ है हालांकि, आखिर में एग्ज़ाम प्रोसेस, आंसर बुक, इवैल्यूएशन और रिजल्ट घोषित करने की ज़िम्मेदारी यूनिवर्सिटी की ही है

इसलिए, ऐसा लगता है कि आंसर बुक यूनिवर्सिटी के एग्ज़ामिनेशन सिस्टम में खो गई थीं इस गंभीर गलती का नतीजा यह हुआ कि स्टूडेंट्स अब पढ़ाई में गंभीर मुश्किलों और अपने भविष्य को लेकर अनिश्चितता का सामना कर रहे हैं शांति से ज़िम्मेदारी लेने और स्टूडेंट्स की चिंताओं को ज़िम्मेदार तरीके से दूर करने के बजाय, यूनिवर्सिटी के अधिकारी उन स्टूडेंट्स की चिंताओं, सुझावों और मुश्किलों पर ठीक से विचार करने में नाकाम रहे, जो अपने भविष्य को लेकर चिंता, तनाव और अनिश्चितता से जूझ रहे थे

भरोसा दिलाने, मदद करने या कोई ठोस हल निकालने के बजाय, अधिकारियों ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया कि इस मामले में बहुत समय लगेगा और स्टूडेंट्स को या तो दोबारा परीक्षा देनी होगी या जांच के नतीजे का इंतज़ार करना होगा

स्टूडेंट्स ने बार-बार सवाल किया कि जब वे खुद इस स्थिति के शिकार हैं तो उन्हें दूसरी परीक्षा देने के लिए क्यों मजबूर किया जाए स्टूडेंट्स ने कहा कि वे पहले ही परीक्षा दे चुके हैं और उनसे उम्मीद की जाने वाली सभी पढ़ाई की ज़रूरतें पूरी कर ली हैं

इसके बाद, एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर, यानी मिस्टर नवीन गोयल ने स्टूडेंट्स को बताया कि 12 जून 2026 को एक मीटिंग होगी और उस समय आगे की बातचीत होगी

अथॉरिटी के इस बयान के बाद, स्टूडेंट्स और सुझाव और चिंताएं बताना चाहते थे लेकिन, उन्हें बातचीत जारी रखने की इजाज़त नहीं दी

गई स्टूडेंट्स के मुताबिक, जब स्टूडेंट्स ने अपने मोबाइल फ़ोन पर बातचीत रिकॉर्ड करना शुरू किया, तो अधिकारी और भी परेशान हो गए

स्टूडेंट्स को चेतावनी दी गई कि अगर वे रिकॉर्डिंग जारी रखते हैं या अगर मामला और बिगड़ता है, तो उनके खिलाफ़ कार्रवाई की जा सकती है स्टूडेंट्स के एक प्रतिनिधि, जो अधिकारियों से सक्रिय रूप से सवाल कर रहे थे, को खास तौर पर चेतावनी दी गई कि अगर स्टूडेंट्स यूनिवर्सिटी के अपनाए गए रुख का विरोध करना जारी रखते हैं, तो उनके खिलाफ़ और सख्त कार्रवाई की जा सकती है

स्टूडेंट्स को जगह छोड़ने का निर्देश दिया गया और उन्हें तुरंत उस इलाके से बाहर जाने के लिए कहा गया अधिकारियों ने सुरक्षा कर्मियों को भी बुलाया और निर्देश दिया कि अगर ज़रूरी हो तो स्टूडेंट्स को जगह से हटा दिया जाए

इसके बाद, श्री नवीन गोयल अपने ऑफिस लौट आए

कुछ समय बाद, स्टूडेंट्स को एहसास हुआ कि 'आगे कोई चर्चा नहीं की जाएगी और यूनिवर्सिटी अधिकारी कोई और जवाब नहीं देंगे इसलिए, स्टूडेंट्स शांति से यूनिवर्सिटी जगह से चले गए '

स्टूडेंट्स को लगा कि गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के फैकल्टी और अधिकारियों ने उनकी चिंताओं को नज़रअंदाज़ कर दिया है अपने एकेडमिक भविष्य के बारे में सच्ची चिंताओं, उम्मीदों और उम्मीदों के साथ यूनिवर्सिटी से संपर्क करने के बावजूद, वे निराश होकर जगह से चले गए स्टूडेंट्स के मुताबिक, सही मदद और भरोसा मिलने के बजाय, उन्हें FIR की कार्रवाई के साथ-साथ डिसिप्लिनरी या लीगल एक्शन का डर महसूस हुआ स्टूडेंट्स का मानना है कि उनकी चिंताओं पर ठीक से ध्यान नहीं दिया गया और मामले में प्रभावित पार्टी होने के बावजूद उनके साथ गलत बर्ताव किया गया

शिकायतें के बारे में:

जो सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के BGMC कोर्स के स्टूडेंट्स ने गुरुग्राम यूनिवर्सिटी को, यूनिवर्सिटी के ऑफिशियल पोर्टल के ज़रिए, अलग-अलग सरकारी ऑनलाइन शिकायत प्लेटफॉर्म के ज़रिए, और हर उस चैनल के ज़रिए की हैं जहाँ वे अपनी चिंताएँ बता सकते थे सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज को भी शिकायतें बताई गईं, जो स्टूडेंट्स का पेरेंट इंस्टिट्यूशन है

हर मुमकिन कोशिश करने के बावजूद, स्टूडेंट्स अपने चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट और उनसे जुड़ी दिक्कतों को लेकर गंभीर चिंताओं का सामना कर रहे हैं इसके अलावा, स्टूडेंट्स अपने भविष्य को लेकर बहुत ज़्यादा टेंशन, चिंता और अनिश्चितता महसूस कर रहे हैं, जो पूरी तरह से उन रिज़ल्ट की घोषणा पर निर्भर है जो अभी तक घोषित नहीं हुए हैं

स्टूडेंट्स के सामने एक सीरियस सवाल है:

वे ग्रेजुएशन डिग्री, DMCs, या फाइनल रिजल्ट के बिना अपने फ्यूचर के एकेडमिक गोल्स को कैसे पूरा करेंगे और मास्टर कोर्स में एडमिशन कैसे लेंगे? अलग-अलग कॉलेजों और यूनिवर्सिटी में एडमिशन 8 जून 2026 से शुरू हो चुके हैं अगर स्टूडेंट्स अपनी पसंद के इंस्टीट्यूशन में एडमिशन नहीं ले पाते हैं, तो उनका फ्यूचर खतरे में पड़ सकता है

स्टूडेंट्स को डर है कि रिजल्ट न आने की वजह से एडमिशन न मिलने से उनके एकेडमिक और प्रोफेशनल फ्यूचर पर बुरा असर पड़ सकता है वे अपने करियर और एजुकेशनल उम्मीदों को लेकर एंग्ज़ायटी, स्ट्रेस, अनसर्टेनिटी और फ्रस्ट्रेशन के कभी न खत्म होने वाले साइकिल में फंस सकते हैं

अगर स्टूडेंट्स को टाइम पर रिजल्ट नहीं मिलते हैं और नतीजतन उन्हें एकेडमिक या प्रोफेशनल नुकसान होता है, तो सवाल यह है: उन नुकसानों के लिए कौन जिम्मेदार और अकाउंटेबल होगा? क्या स्टूडेंट्स खुद जिम्मेदार ठहराए जाएंगे, जबकि वे टाइम पर एग्ज़ाम में शामिल हुए हैं और एक साल से ज़्यादा समय से अपने रिजल्ट का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं?

जब स्टूडेंट्स अपनी चिंताओं, फ्रस्ट्रेशन और सॉल्यूशन की उम्मीद लेकर यूनिवर्सिटी पहुंचे, तो उन्हें संबंधित अथॉरिटी, यानी मिस्टर नवीन गो ने बताया गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर ने कहा कि उन्हें यूनिवर्सिटी कैंपस में बोलते समय अपनी आवाज़ धीमी रखनी चाहिए स्टूडेंट्स ने आगे कहा कि उन्हें चेतावनी दी गई थी कि अगर वे अपनी आवाज़ उठाते रहे तो वहां मौजूद लोगों के खिलाफ FIR फाइल करने सहित एक्शन लिया जा सकता है

स्टूडेंट्स ने यह भी कहा कि जब वे यूनिवर्सिटी कैंपस में अपनी चिंताएं बता रहे थे, तो वहां मौजूद लोगों की तस्वीरें और वीडियो लिए गए थे स्टूडेंट्स सवाल करते हैं कि क्या अधिकारियों ने, जिन्होंने कथित तौर पर उन्हें सिर्फ अपनी चिंताएं मजबूती से उठाने पर FIR की कार्रवाई की धमकी दी थी, उन्हें उस असली मुद्दे पर ध्यान देना चाहिए था जिसकी वजह से यह स्थिति बनी है

स्टूडेंट्स आगे सवाल करते हैं कि जब वे खुद प्रभावित पार्टी हैं और पहले ही ओरिजिनल एग्ज़ाम में शामिल हो चुके हैं, तो उन्हें दोबारा एग्ज़ाम क्यों देने पड़ रहे हैं

इसके अलावा, स्टूडेंट्स सवाल करते हैं कि अगर यूनिवर्सिटी FIR और जांच के साथ आगे बढ़ना चाहती है तो उन्हें अनिश्चित काल तक इंतजार करने के लिए क्यों मजबूर किया जाना चाहिए अधिकारियों के अनुसार, ऐसी जांच पूरी होने के लिए कोई तय टाइमलाइन नहीं है स्टूडेंट्स को बताया गया कि जांच पूरी होने के बाद ही उनके रिजल्ट के बारे में आगे कदम उठाए जाएंगे स्टूडेंट्स का कहना है कि उनकी आंसर बुक से जुड़ी एडमिनिस्ट्रेटिव गलती की वजह से वे पहले ही लंबे समय से परेशान हैं इसलिए उनका मानना है कि उनकी चिंताओं पर तुरंत ध्यान देने और उन्हें हल करने की ज़रूरत है

स्टूडेंट्स ने आगे कहा कि अधिकारियों को उनकी चिंताओं, मांगों और सुझावों को सुनना चाहिए क्योंकि यह कहा जा रहा मामला स्टूडेंट्स की किसी गलती की वजह से नहीं उठा है

स्टूडेंट्स की मुख्य मांगें इस तरह हैं:

1. चौथे सेमेस्टर का रिज़ल्ट जल्द से जल्द, बेहतर होगा कि एक हफ़्ते के अंदर घोषित किया जाए

2. सभी पेंडिंग DMC और एकेडमिक सर्टिफिकेट तुरंत जारी किए जाएं

3. ऑफिशियल यूनिवर्सिटी पोर्टल पर दिखाई देने वाली चौथे सेमेस्टर की रीअपीयर एंट्री के संबंध में स्टूडेंट्स द्वारा दी गई सभी फीस वापस की जाए

4. मामले से जुड़े सभी फैसलों, एक्शन और रिज़ॉल्यूशन के बारे में एक लिखित कम्युनिकेशन

5. रिज़ॉल्यूशन प्रोसेस शुरू होने के एक हफ़्ते के अंदर सभी ज़रूरी एक्शन पूरे किए जाएं

6. स्टूडेंट्स सिर्फ़ अपनी दिक्कतों और गलत काम की वजह से अथॉरिटी को री-एग्ज़ाम देने को तैयार नहीं हैं

स्टूडेंट्स ने लगातार यह भी कहा है कि वे उन हालात की वजह से री-एग्ज़ाम देने को तैयार नहीं हैं जो उनके कंट्रोल से बाहर थे उनका ज़ोर देकर कहना है कि वे पहले ही एग्ज़ाम दे चुके हैं और एग्ज़ाम प्रोसेस में कथित तौर पर पैदा हुई किसी दिक्कत की वजह से उन्हें और पढ़ाई का बोझ नहीं उठाना चाहिए

स्टूडेंट्स आगे यह भी मांग करते हैं कि मास्टर प्रोग्राम के एडमिशन की आखिरी तारीखों से पहले सभी पेंडिंग DMCs, सर्टिफिकेट और

रिज़ल्ट दिए जाएं ताकि वे बिना किसी देरी के अपनी हायर एजुकेशन जारी रख सकें

स्टूडेंट्स की चिंता सिर्फ़ चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट तक ही सीमित नहीं है स्टूडेंट्स को अपने एकेडमिक रिकॉर्ड और पिछले सेमेस्टर से जुड़ी और भी चिंताएं हैं

कई स्टूडेंट्स का कहना है कि उन्हें अभी भी उन सेमेस्टर के DMCs नहीं मिले हैं जिनमें वे पहले ही क्वालिफ़ाई कर चुके हैं, जिसमें फ़र्स्ट, थर्ड और फ़िफ़्थ सेमेस्टर शामिल हैं कई स्टूडेंट्स जो पहले री-एग्ज़ाम में शामिल हुए थे और बाद में क्वालिफ़ाई हुए थे, उनका भी कहना है कि उन्हें अपने अपडेटेड DMCs नहीं मिले हैं

इसके अलावा, कई स्टूडेंट्स ने फोर्थ सेमेस्टर के सिलसिले में गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के ऑफिशियल पोर्टल पर रीअपीयर कैटेगरी में नाम आने के बाद ₹1,000 से ₹3,000 या उससे ज़्यादा का पेमेंट किया स्टूडेंट्स को बाद में लगा कि ये रीअपीयर एंट्री गलत थीं या उनके एग्ज़ाम से जुड़ी असली स्थिति को सही ढंग से नहीं दिखाती थीं

इसलिए स्टूडेंट्स की मांग है कि उनके बैंक अकाउंट से काटे गए ऐसे सभी पेमेंट जल्द से जल्द रिफंड किए जाएं संबंधित अधिकारियों को बार-बार एप्लीकेशन और रिक्वेस्ट करने के बावजूद, स्टूडेंट्स का कहना है कि उन्हें न तो रिफंड मिला है और न ही उन पेमेंट के बारे में संतोषजनक जवाब मिला है

एक और बड़ी चिंता यूनिवर्सिटी द्वारा घोषित पांचवें सेमेस्टर के रिजल्ट से जुड़ी है स्टूडेंट्स के अनुसार, **11 दिसंबर 2025** को दोपहर के सेशन में हुए **मीडिया और इकोनॉमिक्स (पेपर ID 11775)** नाम के एक खास सब्जेक्ट में लगभग 80% से 90% क्लास के स्टूडेंट्स को फेल घोषित कर दिया गया

स्टूडेंट्स सवाल कर रहे हैं कि एक क्लास का इतना बड़ा परसेंटेज एक ही सब्जेक्ट में कैसे फेल हो सकता है और उनका कहना है कि इस मामले को ध्यान से रिव्यू और जांच की ज़रूरत है

ये उन बड़ी शिकायतों में से हैं जिन्हें स्टूडेंट्स ने संबंधित अधिकारियों के सामने बार-बार उठाया है

स्टूडेंट्स 1 जून 2026 की घटनाओं को लेकर भी चिंता जता रहे हैं उनके मुताबिक, अधिकारियों से बातचीत और FIR की कार्रवाई का ज़िक्र होने के बाद, कुछ स्टूडेंट्स को डर लगने लगा कि कहीं वे फेल न हो जाएं भविष्य में उनके रिज़ल्ट से जुड़े फ़ैसले विज़िट के दौरान हुई बहस से प्रभावित हो सकते हैं इसलिए स्टूडेंट्स यह भरोसा चाहते हैं कि उनके रिज़ल्ट से जुड़े भविष्य के सभी फ़ैसले, इवैल्यूएशन और एक्शन फेयर, बिना किसी भेदभाव के होंगे और उस दिन की घटनाओं से होने वाले किसी भी असर से मुक्त होंगे हमारे सामने जो हालात हैं, उनके बारे में कई स्टूडेंट्स ने अपनी राय दी है;

- वंश शर्मा: हमें बहुत परेशानी हो रही है री-अपीयर एग्ज़ाम में क्वालिफ़ाई करने वाले स्टूडेंट्स को भी DMC नहीं मिली हैं रेगुलर सेमेस्टर के स्टूडेंट्स भी इसी दिक्क़त का सामना कर रहे हैं

- स्नेहा: इंस्टीट्यूशन को यह पक्का करना चाहिए कि हर फ़ैसला और रिज़ल्ट फेयर हो 1 जून की घटनाओं का किसी भी स्टूडेंट के रिज़ल्ट पर बुरा असर नहीं पड़ना चाहिए आख़िरी फ़ैसला फेयर होना चाहिए और सभी प्रभावित स्टूडेंट्स को मंज़ूर होना चाहिए

- कपिल : सब कुछ लिखकर दिया जाना चाहिए ताकि स्टूडेंट्स रिज़ल्ट की ऑफ़िशियल घोषणा का इंतज़ार करते हुए एडमिशन जारी रख सकें एडमिनिस्ट्रेटिव गलती की वजह से स्टूडेंट्स इतने लंबे समय तक क्यों परेशान हों? हम सिर्फ़ फेयर रिज़ल्ट चाहते हैं

- भूमिका: हमें बस अपना फेयर रिजल्ट चाहिए प्लीज़ इस मामले में और देर न करें

- पूजा कार्की: वे हमारा दर्द और हमारी चिंताएँ क्यों नहीं समझ रहे हैं? हमें बस अपना फोर्थ सेमेस्टर रिजल्ट, अपने DMCs, और उन दिक्क़तों का हल चाहिए जिनका हम अभी सामना कर रहे हैं

- आर्यन: हमें बिना किसी और देरी के अपना रिजल्ट चाहिए

- प्रियंका: मुझे समझ नहीं आ रहा कि लिखकर कुछ क्यों नहीं दिया जा रहा है हमें बस अपना रिजल्ट चाहिए

ये बातें स्टूडेंट्स के बताए गए विचारों के कुछ उदाहरण हैं उनके अलावा, सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के BGMC कोर्स के

कई स्टूडेंट्स एक साथ अपनी चिंताएँ उठा रहे हैं: वे अपने फोर्थ सेमेस्टर रिजल्ट की घोषणा, सभी पेंडिंग एकेडमिक डॉक्यूमेंट्स जारी करने, और अपनी शिकायतों का फेयर हल चाहते हैं

विचारणीय

बिंदु.

(पॉइंट –1)

चिंताएँ :

गुरुग्राम के सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के BGMC फाइनल ईयर के स्टूडेंट्स अपने फोर्थ सेमेस्टर के रिजल्ट का एक साल से ज़्यादा समय से इंतज़ार कर रहे हैं, साथ ही उन्हें मिसिंग DMCs, विवादित रीअपीयर फीस और सभी ज़रूरी एग्ज़ाम पूरे करने के बावजूद गंभीर एकेडमिक अनिश्चितता का भी सामना करना पड़ रहा है 'गुरुग्राम यूनिवर्सिटी' के अधिकारियों को स्टूडेंट्स की इन 'बड़ी चिंताओं' को समझना चाहिए, जैसे कि;

1.1 फोर्थ सेमेस्टर के रिजल्ट अभी भी घोषित नहीं हुए हैं

1.1 (a) BGMC के स्टूडेंट्स 20, 22, और 24 मई 2025 को फोर्थ सेमेस्टर के एग्ज़ाम में शामिल हुए थे

1.1 (b) एक साल से ज़्यादा समय बीत चुका है, लेकिन रिजल्ट अभी तक घोषित नहीं हुए हैं

1.1 (c) स्टूडेंट्स ने फोर्थ सेमेस्टर रिजल्ट के बिना फाइनल सेमेस्टर पूरा कर लिया है

1.1 (d) पेंडिंग फोर्थ सेमेस्टर रिजल्ट के बावजूद, स्टूडेंट्स पहले ही अपने फाइनल सेमेस्टर के एग्ज़ाम में शामिल हो चुके हैं और उन्हें पूरा कर चुके हैं 1.1 (e) इससे गंभीर एकेडमिक गड़बड़ी और अनिश्चितता पैदा हुई है

1.2 कॉलेज अधिकारियों से बार-बार संपर्क

1.2 (a) स्टूडेंट्स ने बार-बार फैकल्टी मेंबर्स, क्लास इंचार्ज और कॉलेज अधिकारियों से संपर्क किया

1.2 (b) कॉलेज ने लगातार कहा कि मामला पहले ही गुरुग्राम यूनिवर्सिटी को भेज दिया गया था और यह कॉलेज के कंट्रोल से बाहर था

1.3 गुरुग्राम यूनिवर्सिटी को सीधे रिप्रेजेंटेशन

1.3(a) प्रोग्रेस न होने के कारण, स्टूडेंट्स ने खुद गुरुग्राम यूनिवर्सिटी से सफाई और समाधान के लिए संपर्क किया

1.3(b) कोई संतोषजनक समाधान नहीं दिया गया 1.3(c)) DMCs (डिटेल मार्क सर्टिफिकेट) गायब हैं

1.4 कई स्टूडेंट्स को पहले पूरे हो चुके सेमेस्टर के DMCs नहीं मिले हैं, जिनमें शामिल हैं :

- फर्स्ट सेमेस्टर
- थर्ड सेमेस्टर
- फिफ्थ सेमेस्टर

1.5 ऑफिशियल समर्थ पोर्टल पर फोर्थ सेमेस्टर एग्ज़ाम से जुड़ी रीअपीयर एंट्री दिखाई गईं

1.5(a) स्टूडेंट्स का मानना है कि इनमें से कई एंट्री गलत या सटीक नहीं थीं

1.5(b) स्टूडेंट्स को फाइनेंशियल नुकसान

1.5(c)) रीअपीयर एंट्री की वजह से स्टूडेंट्स ने समर्थ पोर्टल के ज़रिए ₹1,000 से ₹3,000 के बीच पेमेंट किया

1.5(d) कई रिक्वेस्ट के बावजूद रिफंड और क्लैरिफिकेशन नहीं दिए गए हैं

1.6 कई शिकायतों को इग्नोर किया गया

1.6(a) स्टूडेंट्स ने कई ईमेल, एप्लीकेशन, रिक्वेस्ट और रिप्रेजेंटेशन सबमिट किए

1.6(b) संबंधित अधिकारियों से कोई असरदार जवाब या समाधान नहीं मिला

1.7 कॉलेज और यूनिवर्सिटी के बीच ज़िम्मेदारी का बदलाव

1.7(a) कॉलेज के अधिकारियों ने बार-बार स्टूडेंट्स को बताया कि यह मामला पूरी तरह से गुरुग्राम यूनिवर्सिटी के अधिकार क्षेत्र में आता है

1.7(b) स्टूडेंट्स को यूनिवर्सिटी के साथ इस मामले को आगे बढ़ाने का निर्देश दिया गया

1.8 हायर एजुकेशन और करियर के मौकों पर असर

1.8(a) देर से आए रिज़ल्ट से इन चीज़ों में अनिश्चितता पैदा हुई है:

1.8(b) हायर एजुकेशन में एडमिशन

1.8(c) एकेडमिक प्रोग्रेस

1.8(d) नौकरी के मौके

1.8(f) प्रोफेशनल प्लानिंग

1.9 मेंटल स्ट्रेस और एंग्ज़ायटी

1.9(a) लंबे समय तक देरी से ये चीज़ें हुईं:

1.9(b) एकेडमिक अनिश्चितता

1.9(c) फ्रस्ट्रेशन

1.9(d) एंग्ज़ायटी

1.9(e) साइकोलॉजिकल स्ट्रेस

1.10 स्टूडेंट्स ने सभी एकेडमिक ज़रूरतें पूरी कीं

1.10(a) स्टूडेंट्स ने सभी एग्ज़ाम दिए और सभी एकेडमिक ज़िम्मेदारियाँ पूरी कीं

1.10(b) उनका कहना है कि उन्हें अपने कंट्रोल से बाहर के एडमिनिस्ट्रेटिव या एग्ज़ाम से जुड़े मामलों का नतीजा नहीं भुगतना चाहिए

मुख्य माँगें

I. चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट तुरंत घोषित किए जाएँ

II. सभी पेंडिंग DMC और मार्कशीट जारी करना

III. गलत रीअपीयर एंट्री के बारे में सफाई

IV. जहां लागू हो, गलत तरीके से जमा की गई रीअपीयर फीस का रिफंड

V. सभी पेंडिंग शिकायतों का सही, समय पर और असरदार समाधान

VI. स्टूडेंट्स के एकेडमिक और प्रोफेशनल भविष्य को और नुकसान से बचाना

VII. स्टूडेंट्स चाहते हैं कि गुरुग्राम यूनिवर्सिटी की अथॉरिटी बिना किसी बातचीत के एक हफ्ते के अंदर उनका सारा पेंडिंग काम दे दे

(पॉइंट –2)

मांगें और मकसद

BGMC के स्टूडेंट्स सिर्फ़ अपने जायज़ एकेडमिक अधिकार चाहते हैं: पेंडिंग रिज़ल्ट तुरंत घोषित करना, सभी DMC और मार्कशीट जारी करना, किसी भी री-एग्ज़ाम से सुरक्षा, गलत तरीके से ली गई री-अपीयर फीस वापस करना, अधिकारियों से लिखित भरोसा, और उनके कंट्रोल से बाहर की देरी से होने वाले आगे के एकेडमिक, प्रोफेशनल, फाइनेंशियल और इमोशनल नुकसान को रोकने के लिए एक टाइम-बाउंड सॉल्यूशन

2.1 पेंडिंग रिज़ल्ट तुरंत घोषित करना

2.1(a) सभी पेंडिंग एग्ज़ामिनेशन रिज़ल्ट तुरंत घोषित किए जाने चाहिए

2.2(b) स्टूडेंट्स को पहले से हो चुके एग्ज़ाम के लिए अनिश्चित काल तक इंतज़ार करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए

2.2 पेंडिंग DMC और मार्कशीट जारी करना

2.2(a) सभी पेंडिंग तुरंत जारी करना:

i. DMC

ii. मार्कशीट

iii. एकेडमिक रिकॉर्ड

iv. पहले, तीसरे और पांचवें सेमेस्टर के रिकॉर्ड शामिल हैं v. ये डॉक्यूमेंट्स एडमिशन, जॉब, स्कॉलरशिप और कॉम्पिटिटिव एग्ज़ाम के लिए ज़रूरी हैं

2.3 दोबारा एग्ज़ाम या री-एग्ज़ाम नहीं

2.3(a) स्टूडेंट्स पहले से अटेम्प्ट किए गए पेपर्स के लिए दोबारा एग्ज़ाम कराने का कड़ा विरोध करते हैं

2.3(b) इंस्टीट्यूशनल या एडमिनिस्ट्रेटिव फेलियर स्टूडेंट्स पर नहीं डाले जाने चाहिए

2.4 एकेडमिक फ्यूचर की सुरक्षा

2.4(a) किसी भी स्टूडेंट को ये नहीं खोना चाहिए:

2.4(b) एडमिशन के मौके

2.5 एकेडमिक प्रोग्रेस

2.5(a) स्कॉलरशिप

2.5(b) इंटर्नशिप

2.6 नौकरी के मौके

2.6(a) यूनिवर्सिटी या कॉलेज की वजह से हुई देरी के कारण

2.7 री-अपीयर फीस का रिफंड और क्लैरिफिकेशन

2.7(a) अथॉरिटीज़ को सभी री-अपीयर फीस पेमेंट का स्टेटस क्लैरिफ़ाई करना चाहिए

2.7(b) स्टूडेंट्स को पूरा रिफंड मिलना चाहिए, जहाँ फीस गलतियों या गलत पोर्टल एंट्रीज़ की वजह से जमा की गई थी

2.7(b) स्टूडेंट्स को पूरा रिफंड मिलना चाहिए, जहाँ फीस गलतियों या गलत पोर्टल एंट्रीज़ की वजह से जमा की गई थी

2.8 अधिकारियों से लिखित भरोसा

स्टूडेंट्स इन चीज़ों के बारे में लिखित कन्फ़र्मेशन चाहते हैं:

2.8(a) पेंडिंग रिज़ल्ट का अभी का स्टेटस

2.8(b) रिज़ल्ट घोषित करने की सही टाइमलाइन

2.8(c) DMC और मार्कशीट जारी करने की टाइमलाइन

2.8(d) समस्या को हल करने के लिए उठाए जा रहे कदम

2.8(e) पढ़ाई का और नुकसान रोकने के उपाय

2.8(f) प्रोसेस शुरू होने के एक हफ़्ते के अंदर सभी मांगे गए काम पूरे करना

2.9 स्टूडेंट के हितों को बंधक नहीं बनाया जाना चाहिए

2.9(a) स्टूडेंट्स का भविष्य इन चीज़ों पर निर्भर नहीं होना चाहिए:

2.9(b) अंदरूनी पूछताछ

2.9(c) जांच

2.9(d) एडमिनिस्ट्रेटिव झगड़े

2.9(e) इंस्टीट्यूशनल कार्रवाई

2.9(f) स्टूडेंट्स को उन मामलों का नतीजा नहीं भुगतना चाहिए जो उनके कंट्रोल से बाहर हैं

2.10 तुरंत और टाइम-बाउंड सॉल्यूशन

2.10(a) यूनिवर्सिटी और कॉलेज को सभी पेंडिंग मामलों को हल करना चाहिए:

2.10(b) ट्रांसपेरेंटली

2.10(c) फेयरली

2.10(d) अर्जेंटली

2.10(e) एक तय टाइमफ्रेम के अंदर

मुख्य मकसद

I. स्टूडेंट्स कोई खास फेवर या कंसेशन नहीं मांग रहे हैं

II. वे सिर्फ ये चाहते हैं:

a. उनके पेंडिंग रिजल्ट्स का डिक्लेरेशन

b. उनके एकेडमिक रिकॉर्ड जारी करना

c. उनके एकेडमिक और प्रोफेशनल फ्यूचर की सुरक्षा

III. स्टूडेंट्स ने अटेंडेंस, एग्ज़ाम और फीस पेमेंट सहित सभी एकेडमिक ऑब्लिगेशन्स पूरी कर ली हैं

मुख्य चिंताएं

1) एक साल से ज़्यादा की अनसर्टेनिटी ने स्टूडेंट्स के करियर और हायर एजुकेशन प्लान्स पर असर डाला है

2) स्टूडेंट्स को मास्टर प्रोग्राम्स और दूसरी हायर स्टडीज़ के लिए एडमिशन के मौके खोने का रिस्क है

3) देरी से काफी मेंटल परेशानी, एंग्ज़ायटी, फ्रस्ट्रेशन और फाइनेंशियल मुश्किल हुई है 4) स्टूडेंट्स को उनके कंट्रोल से बाहर की एडमिनिस्ट्रेटिव या इंस्टीट्यूशनल नाकामियों की वजह से परेशानी नहीं होनी चाहिए

(पॉइंट –3)

स्टूडेंट्स की कोशिशें :

अपने फोर्थ सेमेस्टर के एग्ज़ाम पूरे करने के एक साल से ज़्यादा समय बाद, सेक्टर-9 गवर्नमेंट PG कॉलेज के BGMC स्टूडेंट्स को कथित तौर पर यूनिवर्सिटी अधिकारियों से पता चला कि उनकी आंसर बुक खो गई हैं, जबकि यूनिवर्सिटी को इस बारे में काफी समय से पता था इस दौरान, स्टूडेंट्स को कोई रिजल्ट नहीं मिला, कोई लिखित आश्वासन नहीं मिला, समाधान के लिए कोई साफ टाइमलाइन नहीं मिली, और उन्हें मास्टर्स एडमिशन और दूसरे एकेडमिक मौके खोने का खतरा था ईमेल, एप्लीकेशन, बार-बार विज़िट और अधिकारियों के साथ मीटिंग करने के बाद भी, स्टूडेंट्स सिर्फ लिखित क्लैरिफिकेशन और उस समस्या का सही समाधान चाहते रहे, जिसके बारे में उनका कहना था कि यह पूरी तरह से उनके कंट्रोल से बाहर थी

3.1 यूनिवर्सिटी ने कथित तौर पर माना कि आंसर बुक खो गई थीं

स्टूडेंट्स के मुताबिक, एग्ज़ामिनेशन कंट्रोलर ने कहा कि फोर्थ सेमेस्टर की आंसर बुक खो गई थीं या उनका पता नहीं चल सका, और यूनिवर्सिटी को नहीं पता था कि वे कहाँ हैं या वे गुरुग्राम यूनिवर्सिटी पहुँची भी थीं या नहीं

3.1(a) स्टूडेंट्स ने एग्ज़ाम पूरा किया 3.1(b) कहा जा रहा है कि नुकसान एग्ज़ामिनेशन प्रोसेस के बाद हुआ

3.1(c) यह दिक्कत एग्ज़ामिनेशन एडमिनिस्ट्रेशन की वजह से हुई, स्टूडेंट के किसी बर्ताव की वजह से नहीं

3.1(d) स्टूडेंट एक साल से ज़्यादा समय से इंतज़ार कर रहे हैं, क्योंकि यह दिक्कत उन्होंने पैदा नहीं की है

3.2 यूनिवर्सिटी के अधिकारियों को कहा जा रहा है कि उन्हें इस दिक्कत के बारे में बहुत पहले से पता था

3.2(a) स्टूडेंट को बार-बार बताया गया कि: यह दिक्कत यूनिवर्सिटी के सीनियर अधिकारियों को पहले से पता थी और इस पर कई बार बात हो चुकी थी

3.2(b) कहा जा रहा है कि यह दिक्कत नई नहीं खोजी गई थी

3.2(c) जानकारी होने के बावजूद, एक साल से ज़्यादा समय तक कोई असरदार हल नहीं निकाला गया

3.2(d) स्टूडेंट परेशान होते रहे, जबकि अधिकारियों को कहा जा रहा है कि उन्हें पहले से ही इसकी जानकारी थी

3.3 बिना किसी ऑफिशियल लिखित क्लैरिफिकेशन के एक साल से ज़्यादा समय बीत गया

3.3(a) इसके बावजूद:

• बार-बार विज़िट,

• ईमेल,

• एप्लीकेशन,

• रिप्रेजेंटेशन,

• पर्सनल मीटिंग,

स्टूडेंट्स को कथित तौर पर मिला:

कोई लिखित भरोसा नहीं, कोई टाइमलाइन नहीं, और उनके रिजल्ट कब घोषित किए जाएंगे, इस बारे में कोई फॉर्मल एक्सप्लेनेशन नहीं

3.4 स्टूडेंट्स से उस प्रॉब्लम के नतीजे भुगतने के लिए कहा गया जो उन्होंने पैदा नहीं की थी

3.4(a) कथित तौर पर दिए गए ऑप्शन थे:

• दोबारा एग्ज़ाम

• इंक्वायरी/FIR प्रोसेस का इंतज़ार

3.4(b) स्टूडेंट्स का मुख्य तर्क है:

वे एग्ज़ाम में बैठे, सभी ज़रूरतें पूरी कीं, और इसलिए उन्हें इंस्टीट्यूशनल गलतियों के नतीजे भुगतने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए

3.5 मास्टर्स एडमिशन पर तुरंत खतरा

3.5(a) स्टूडेंट्स ने खास तौर पर यह बात उठाई कि:

मास्टर्स प्रोग्राम के लिए एडमिशन 8 जून 2026 से शुरू हो रहे थे, फिर भी उनके पास न तो रिजल्ट थे और न ही मार्कशीट

3.5(b) इससे यह मामला सिर्फ देरी से सीधे खतरे में बदल जाता है:

• हायर एजुकेशन,

• करियर में तरक्की,

• पढ़ाई जारी रखना

3.6 स्टूडेंट्स ने सिर्फ लिखित भरोसा मांगा

3.6(a) एक बार-बार आने वाली बात यह है कि स्टूडेंट्स खास ट्रीटमेंट की मांग नहीं कर रहे थे

वे मांग रहे थे:

3.6(b) मामले की स्थिति को कन्फ़र्म करने वाला लिखित डॉक्यूमेंट ताकि वे एडमिशन के दौरान अपनी स्थिति बता सकें

3.6(c) ऐसा कोई लिखित भरोसा नहीं दिया गया

3.7 स्टूडेंट्स को बार-बार एडमिनिस्ट्रेटिव दिक्कतों का सामना करना पड़ा

3.7(a) स्टूडेंट्स के अनुसार:

• उन्हें एक ऑफिस से दूसरे ऑफिस भेजा गया • कहा जाता है कि अधिकारी मौजूद नहीं थे

• मीटिंग में आना मुश्किल था

• फैसला लेने वालों तक पहुंच सीमित थी

इससे यह धारणा बनी कि:

ऑफिशियल तरीकों से कोशिश करने के बावजूद स्टूडेंट्स को सही जवाब नहीं मिल पाए

3.8 जवाब ढूंढने में स्टूडेंट्स ने खुद समय और पैसा खर्च किया

3.8(a) स्टूडेंट्स ने:

• आपस में पैसे इकट्ठा किए

• आने-जाने का इंतज़ाम किया

• सब मिलकर यूनिवर्सिटी गए

इससे पता चलता है कि:

स्टूडेंट्स ने चुपचाप रहने के बजाय एक्टिवली मामले को सुलझाने की कोशिश की

3.9 पढ़ाई और दिमाग पर गंभीर असर

3.9(a) कहा जाता है कि देरी की वजह से ये हुआ:

• चिंता,

• तनाव,

• निराशा,

• अनिश्चितता,

• एडमिशन खोने का डर,

• करियर के मौके खोने का डर

इस मामले ने सिर्फ़ एग्ज़ामिनेशन रिकॉर्ड पर ही असर नहीं डाला, बल्कि स्टूडेंट्स के भविष्य के प्लान पर भी असर डाला

3.10 स्टूडेंट्स शांति से रहे और फॉर्मल तरीकों से पढ़ाई जारी रखी

3.10(a) पूरे अकाउंट में:

• स्टूडेंट्स फैकल्टी से मिले

• एप्लीकेशन जमा किए

• ईमेल भेजे

• मीटिंग के लिए रिक्वेस्ट की

• अपने एकेडमिक भविष्य के लिए अथॉरिटी से सिर्फ़ लिखकर क्लैरिफिकेशन मांगा

(पॉइंट –4)

गुरुग्राम यूनिवर्सिटी का जवाब :

अपने फोर्थ सेमेस्टर के एग्ज़ाम पूरे करने के एक साल से ज़्यादा समय बाद, BGMC के स्टूडेंट्स को कहा गया कि उनकी आंसर बुक खो गई है और यूनिवर्सिटी उनके रिजल्ट नहीं बता सकती बार-बार रिप्रेजेंटेशन देने और यूनिवर्सिटी में एक साथ जाने के बावजूद, स्टूडेंट्स को कहा गया कि सिर्फ़ दो ऑप्शन दिए गए: या तो वे उन एग्ज़ाम में दोबारा बैठें जो वे पहले ही दे चुके हैं या FIR और जांच के नतीजे का बिना किसी गारंटी वाली

टाइमलाइन के अनिश्चित समय तक इंतज़ार करें मास्टर्स के एडमिशन पास आने पर, कोई लिखित भरोसा, टाइमलाइन या पक्का सॉल्यूशन नहीं दिया गया, जिससे स्टूडेंट्स अपनी पढ़ाई, करियर और भविष्य को लेकर अनिश्चितता का सामना कर रहे हैं, जबकि उन्होंने सभी एकेडमिक ज़रूरतें पूरी कर ली थीं

4.1 स्टूडेंट्स को बताया गया कि उनकी आंसर बुक खो गई हैं

4.1(a) यूनिवर्सिटी ने कहा गया कि स्टूडेंट्स को बताया गया कि उनकी फोर्थ सेमेस्टर की आंसर बुक खो गई हैं और उन्हें वापस नहीं पाया जा सकता, जिससे रिजल्ट बताना नामुमकिन हो गया

• स्टूडेंट्स ने एग्ज़ाम पूरे किए

• कहा गया नुकसान एग्ज़ामिनेशन सिस्टम के अंदर हुआ

• यह समस्या तब शुरू हुई जब स्टूडेंट्स ने सभी एकेडमिक ज़रूरतें पूरी कर ली थीं

4.2 एक साल से ज़्यादा समय बिना रिज़ल्ट के बीत गया

4.2(a) स्टूडेंट्स को एक साल से ज़्यादा समय तक अपने चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट नहीं मिले, जबकि उन्होंने बहुत पहले ही परीक्षाएँ पूरी कर ली थीं

असर:

• बहुत ज़्यादा देरी

• लगातार एकेडमिक अनिश्चितता

• स्टूडेंट्स के एजुकेशनल सफ़र में कीमती समय का नुकसान

4.3 स्टूडेंट्स को सिर्फ़ दो ऑप्शन दिए गए थे

स्टूडेंट्स के मुताबिक, यूनिवर्सिटी ने सिर्फ़ ये ऑप्शन दिए:

• परीक्षा में दोबारा शामिल होना

• FIR और जांच का इंतज़ार करना, जिसका समय पूरी तरह से पक्का नहीं था

खास बात:

कहा जाता है कि स्टूडेंट्स को पहले दी गई परीक्षा को दोबारा देने या जांच के लिए अनिश्चित काल तक इंतज़ार करने के बीच चुनने के लिए मजबूर किया गया था

4.4 टाइमफ्रेम के बारे में कोई भरोसा नहीं

अधिकारियों ने कथित तौर पर कहा कि:

'कोई नहीं कह सकता कि जांच में कितना समय लगेगा, रिज़ल्ट कब घोषित होंगे, या स्टूडेंट्स को उनकी डिग्री कब मिलेगी '

इससे इन चीज़ों को लेकर पूरी तरह से अनिश्चितता पैदा हो गई:

• रिज़ल्ट,

• डिग्री,

• एडमिशन,

• भविष्य की एकेडमिक प्रोग्रेस

4.5 स्टूडेंट्स को हायर एजुकेशन के मौके खोने का खतरा

4.5(a) मास्टर्स के एडमिशन पास आ रहे थे, फिर भी स्टूडेंट्स के पास न तो रिज़ल्ट थे और न ही ऑफिशियल एकेडमिक रिकॉर्ड

इससे सीधे तौर पर खतरा है:

• पोस्टग्रेजुएट एडमिशन,

• करियर प्लानिंग,

• एकेडमिक कंटिन्यूटी

4.6 स्टूडेंट्स विक्टिम थे, फिर भी उन्हें नतीजे भुगतने पड़े

4.6(a)स्टूडेंट्स ने बार-बार तर्क दिया:

वे पहले ही एग्ज़ाम दे चुके थे और सभी ज़रूरतें पूरी कर चुके थे, फिर भी उनसे एक कथित इंस्टीट्यूशनल गलती के नतीजे भुगतने के लिए कहा जा रहा था

यह सबसे मज़बूत फेयरनेस तर्कों में से एक है

4.7 स्टूडेंट्स ने शांति से जवाब मांगे

स्टूडेंट्स:

• यूनिवर्सिटी गए

• मीटिंग के लिए रिक्वेस्ट की

• सवाल पूछे

• क्लैरिफिकेशन मांगा

• लिखित भरोसा मांगा

उनका मकसद टकराव नहीं था, बल्कि अपने भविष्य के बारे में जानकारी लेना था

4.8 कोई लिखित भरोसा नहीं दिया गया

4.8(a) बार-बार रिक्वेस्ट करने के बावजूद:

कहा जाता है कि स्टूडेंट्स को एडमिशन, रिजल्ट या समस्या के समाधान के बारे में कोई लिखित क्लैरिफिकेशन, कोई लिखित टाइमलाइन और कोई फॉर्मल भरोसा नहीं मिला

4.9 स्टूडेंट्स को मदद मिलने के बजाय डराया-धमकाया गया

4.9(a) स्टूडेंट्स के अनुसार:

• रिकॉर्डिंग करने से मना किया गया

• कार्रवाई की चेतावनी दी गई

• सिक्योरिटी वालों को बुलाया गया

• स्टूडेंट्स को जाने के लिए कहा गया

4.9(b) स्टूडेंट्स की सोच यह थी कि:

'उनकी चिंताओं का जवाब सॉल्यूशन के बजाय वॉर्निंग से दिया गया '

4.10 स्टूडेंट्स आखिर में बिना किसी सॉल्यूशन के चले गए

4.10(a) इसके बाद:

• एक साल से ज़्यादा इंतज़ार करने के बाद,

• यूनिवर्सिटी जाने के बाद,

• अधिकारियों से मिलने के बाद,

• एक्सप्लेनेशन मांगने के बाद,

स्टूडेंट्स के पास ये चीज़ें थीं:

कोई रिज़ल्ट नहीं, कोई लिखा हुआ भरोसा नहीं, कोई कन्फ़र्म टाइमलाइन नहीं, और कोई तुरंत सॉल्यूशन नहीं

(पॉइंट –5)

शिकायत :

यूनिवर्सिटी पोर्टल, सरकारी शिकायत प्लेटफॉर्म, बार-बार रिप्रेजेंटेशन और पर्सनल विज़िट सहित हर उपलब्ध शिकायत मैकेनिज़्म का इस्तेमाल करने के बावजूद, BGMC के स्टूडेंट्स को अपनी परीक्षाओं के एक साल से ज़्यादा समय बाद भी अपने चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट नहीं मिले हैं पोस्टग्रेजुएट एडमिशन पहले से ही चल रहे हैं, ऐसे में रिज़ल्ट, डिग्री और DMCs न होने के कारण स्टूडेंट्स को हायर एजुकेशन के मौके खोने का खतरा है वे उन परीक्षाओं के लिए दोबारा बैठने के लिए मजबूर किए जाने का कड़ा विरोध करते हैं जो उन्होंने पहले ही पूरी कर ली हैं, विवादित रीअपीयर फीस का रिफंड चाहते हैं, सभी पेंडिंग एकेडमिक रिकॉर्ड जारी करने की मांग करते हैं, और लिखित आश्वासन मांगते हैं कि उनके रिज़ल्ट के बारे में भविष्य के फैसले फेयर, निष्पक्ष होंगे, और जवाबदेही मांगने की उनकी कोशिशों से होने वाले किसी भी असर से मुक्त होंगे

5.1 स्टूडेंट्स ने हर उपलब्ध शिकायत मैकेनिज़्म का इस्तेमाल किया है

5.1(a) स्टूडेंट्स ने यूनिवर्सिटी पोर्टल, सरकारी शिकायत पोर्टल, कॉलेज एडमिनिस्ट्रेशन, ईमेल, एप्लीकेशन और पर्सनल विज़िट के ज़रिए शिकायतें दर्ज कीं, फिर भी मुख्य मुद्दा अभी भी अनसुलझा है

मजबूत बात: यह दिखाता है कि स्टूडेंट्स ने मामले को आगे बढ़ाने से पहले हर उपलब्ध इंस्टीट्यूशनल उपाय की कोशिश की

5.2 एक साल से ज़्यादा समय से पढ़ाई में रुकावट

5.2(a) एग्ज़ाम पूरे करने के बाद भी स्टूडेंट्स अपने चौथे सेमेस्टर के रिज़ल्ट का एक साल से ज़्यादा समय से इंतज़ार कर रहे हैं

यह क्यों ज़रूरी है:

• रिज़ल्ट अभी भी नहीं आए हैं

• डिग्री अधूरी हैं

• पढ़ाई में तरक्की असल में रुक गई है

5.3 मास्टर्स एडमिशन खोने का तुरंत खतरा

पोस्टग्रेजुएट प्रोग्राम के लिए एडमिशन 8 जून 2026 को शुरू हुए, जबकि स्टूडेंट्स के पास अभी भी रिज़ल्ट, DMC और ग्रेजुएशन रिकॉर्ड नहीं थे

यह स्टूडेंट्स को हुए सबसे बड़े प्रैक्टिकल नुकसानों में से एक है

5.4 मुख्य जवाबदेही का सवाल

सबसे बड़े सवालों में से एक यह है कि:

अगर स्टूडेंट्स एडमिशन, करियर या पढ़ाई के मौके इसलिए खो देते हैं क्योंकि रिज़ल्ट घोषित नहीं हुए, तो उन नुकसानों के लिए कौन

ज़िम्मेदार होगा?

यह सीधे तौर पर जवाबदेही का मुद्दा उठाता है

5.5 स्टूडेंट्स ने उस प्रॉब्लम के लिए री-एग्ज़ाम का विरोध किया जो उन्होंने पैदा नहीं की थी

स्टूडेंट्स ओरिजिनल एग्ज़ाम में शामिल हुए थे और सभी ज़रूरतें पूरी की थीं

उनका तर्क:

'आंसर बुक से जुड़ी एडमिनिस्ट्रेटिव गलती के कारण उन्हें दोबारा एग्ज़ाम के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए '

5.6 स्टूडेंट्स को अनिश्चित काल तक इंतज़ार करने के लिए कहा गया

बताया गया:

FIR/इन्वेस्टिगेशन ऑप्शन के साथ कोई तय टाइमलाइन नहीं थी और इस बात का कोई भरोसा नहीं था कि रिज़ल्ट, डिग्री या एकेडमिक रिकॉर्ड कब मिलेंगे

इसका मतलब है कि स्टूडेंट्स को अपने कंट्रोल से बाहर के प्रोसेस का इंतज़ार करते हुए कई साल बर्बाद हो सकते हैं

5.7 कई सेमेस्टर में DMCs का न होना

कहा जाता है कि कई स्टूडेंट्स के पास अभी भी ये चीज़ें नहीं हैं:

• पहले सेमेस्टर के DMCs

• तीसरे सेमेस्टर के DMCs

• पाँचवें सेमेस्टर के DMCs

• री-अपीयर एग्ज़ाम पास करने के बाद अपडेटेड DMCs

इससे पता चलता है कि यह समस्या एक सेमेस्टर के रिज़ल्ट से कहीं ज़्यादा है

5.8 रीअपीयर फीस पेमेंट से फाइनेंशियल नुकसान

यूनिवर्सिटी पोर्टल पर रीअपीयर एंट्री आने के बाद स्टूडेंट्स ने ₹1,000 से ₹3,000 (या उससे ज़्यादा) के बीच पेमेंट किया

स्टूडेंट्स का कहना है:

• एंट्री गलत हो सकती हैं

• रिफंड नहीं दिया गया है

• क्लैरिफिकेशन नहीं दिया गया है

5.9 एक सब्जेक्ट में बहुत ज़्यादा फेलियर रेट

स्टूडेंट्स के अनुसार:

पांचवें सेमेस्टर की परीक्षा में मीडिया और इकोनॉमिक्स (पेपर ID 11775) में क्लास के लगभग 80%–90% स्टूडेंट्स को फेल घोषित किया गया

यह एक संभावित रूप से बड़ी एकेडमिक चिंता है क्योंकि इतनी ज़्यादा फेलियर रेट अक्सर इन चीज़ों की जांच की मांग करती है:

• इवैल्यूएशन प्रोसेस,

• क्वेश्चन पेपर की मुश्किल,

• असेसमेंट कंसिस्टेंसी

5.10 1 जून की घटना के बाद बदले की कार्रवाई का डर

स्टूडेंट्स ने चिंता जताई कि:

5.10(a) उनके रिज़ल्ट के बारे में भविष्य के फ़ैसले यूनिवर्सिटी विज़िट के दौरान हुई असहमति से प्रभावित हो सकते हैं, क्योंकि स्टूडेंट्स ने FIR की धमकी दी थी

इसलिए वे चाहते हैं:

5.10(b) लिखित आश्वासन कि भविष्य की सभी कार्रवाई और मूल्यांकन निष्पक्ष, बिना भेदभाव के रहेंगे

5.11 स्टूडेंट के बयान

कपिल कौशिक :

"सब कुछ लिखित में दिया जाना चाहिए ताकि स्टूडेंट्स रिज़ल्ट की ऑफिशियल घोषणा का इंतज़ार करते हुए एडमिशन जारी रख सकें "

पूजा कार्की :

"हम सिर्फ़ अपना चौथा सेमेस्टर रिज़ल्ट, अपने DMCs, और उन समस्याओं का समाधान चाहते हैं जिनका हम सामना कर रहे हैं "

भूमिका :

"हम सिर्फ़ अपना निष्पक्ष रिज़ल्ट चाहते हैं   कृपया मामले में देरी करना बंद करें "

आर्यन :

"हमें बिना किसी और देरी के अपना रिज़ल्ट चाहिए "

प्रियंका बीस्ट :

“सच में पता नहीं वे लिखकर कुछ देने को तैयार क्यों नहीं थे? हम बस अपनी चिंता का हल चाहते हैं ”

करण :

“हम बस यही चाहते हैं कि चौथे सेमेस्टर का हमारा फेयर रिजल्ट आए और सीमित समय के भीतर अन्य चिंताओं का समाधान ”

(पॉइंट –6)

UGC – गाइडलाइन्स :

नियम,

6.1 स्टूडेंट्स को समय पर एग्ज़ाम और रिजल्ट घोषित करने का अधिकार है

6.1(a) UGC स्टूडेंट्स एंटाइटलमेंट गाइडलाइन्स, 2012 के तहत, स्टूडेंट्स को ये अधिकार हैं:

समय पर एग्ज़ाम

6.1(b) इंस्टीट्यूशन द्वारा पब्लिश किए गए एकेडमिक कैलेंडर/प्रॉस्पेक्ट्स के अनुसार रिजल्ट घोषित करना

6.1(c) यह इस स्थिति के लिए खास तौर पर ज़रूरी है क्योंकि अगर यूनिवर्सिटी ने एक साल से ज़्यादा समय तक रिजल्ट घोषित नहीं किए हैं, तो यह कहा जा सकता है कि इंस्टीट्यूशन UGC गाइडलाइन्स के हिसाब से समय पर रिजल्ट घोषित करने में नाकाम रहा है

6.2 डिग्री 180 दिनों के अंदर दी जानी चाहिए

6.2(a) UGC ने बार-बार हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्स को रिजल्ट घोषित होने के 180 दिनों के अंदर डिग्री और फाइनल सर्टिफिकेट देने का निर्देश दिया है इसका मतलब है:

रिजल्ट घोषित डिग्री/DMC/सर्टिफिकेट तय समय के अंदर मिल जाना चाहिए

यह नियम यूनिवर्सिटी को रिजल्ट घोषित करने में अनिश्चित काल तक देरी करने का अधिकार नहीं देता है

6.3 यूनिवर्सिटी को अपने एकेडमिक कैलेंडर का पालन करना होगा

UGC ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि परीक्षाएं और रिजल्ट घोषित करना संस्थान के एकेडमिक कैलेंडर के अनुसार होना चाहिए स्टूडेंट्स को उन टाइमलाइन का पालन होने की उम्मीद करने का हक है

लेकिन अब सेक्टर-9 PG कॉलेज के BGMC का मामला;

a) चौथे सेमेस्टर की परीक्षाएं मई 2025 में हुईं

b) एक साल से ज़्यादा समय बीत चुका है

c) रिजल्ट घोषित नहीं हुए हैं

d) स्टूडेंट्स एडमिशन और हायर स्टडीज़ नहीं कर पा रहे हैं

e) यूनिवर्सिटी UGC स्टूडेंट्स एंटाइटलमेंट गाइडलाइंस, 2012 के अनुसार रिजल्ट की समय पर घोषणा सुनिश्चित करने में नाकाम रही है

f) लंबी देरी से स्टूडेंट्स की हायर एजुकेशन और नौकरी के मौकों को गंभीर नुकसान हो रहा है, जिसे UGC ने खुद नुकसानदायक माना है

g) यूनिवर्सिटी को एक लिखित टाइमलाइन और तुरंत समाधान देना चाहिए क्योंकि स्टूडेंट्स को अनिश्चित एकेडमिक अनिश्चितता में नहीं छोड़ा जा सकता

h) स्टूडेंट अथॉरिटी द्वारा दोबारा परीक्षा कराने का कड़ा विरोध करते हैं और वे किसी भी तरह एक हफ्ते के अंदर अपने रिजल्ट चाहते हैं क्योंकि अब एक साल से ज़्यादा हो गया है

लेकिन अब सेक्टर-9 PG कॉलेज के BAJMC का मामला;

a. चौथे सेमेस्टर के एग्ज़ाम मई 2025 में हुए थे

b. एक साल से ज़्यादा समय बीत चुका है

c. रिज़ल्ट अभी तक घोषित नहीं हुए हैं

d. स्टूडेंट्स एडमिशन और हायर स्टडीज़ नहीं कर पा रहे हैं

e. यूनिवर्सिटी UGC स्टूडेंट्स एंटाइटलमेंट गाइडलाइंस, 2012 के मुताबिक, रिज़ल्ट समय पर घोषित करने में नाकाम रही है

f. लंबी देरी से स्टूडेंट्स की हायर एजुकेशन और नौकरी के मौकों पर गंभीर असर पड़ रहा है, जिसे UGC ने खुद नुकसानदायक माना है

g. यूनिवर्सिटी को एक लिखित टाइमलाइन और तुरंत समाधान देना चाहिए क्योंकि स्टूडेंट्स को अनिश्चित एकेडमिक अनिश्चितता में नहीं छोड़ा जा सकता

h. स्टूडेंट्स अथॉरिटी द्वारा दोबारा एग्ज़ाम कराने का कड़ा विरोध करते हैं और वे किसी भी तरह एक हफ्ते के अंदर अपने रिज़ल्ट चाहते हैं क्योंकि अब एक साल से ज़्यादा हो गया है